Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2023-25

www.dainikvishwapariwar.com

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 41 ● वर्ष : 14 ● रायपुर, बुधवार 12 अगस्त 2026 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

नागरिक आदर्शवान और अनुशासित होना चाहिये, हमारा देश निश्चित विकास करेगा।

Our country would Certainly develop it our citizens submit the mselves to idealism and discipline.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

हर घर तिरंगा अभियानः 15 अगस्त को हर घर लहराएं तिरंगा

■ पीएम मोदी ने देशवासियों से की अपील

नई दिल्ली। देश 15 अगस्त 2026 को अपना 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी की ओर से 9 से 17 अगस्त तक देशभर में 'हर घर तिरंगा अभियान' चलाया जा रहा है। इस वर्ष यह अभियान राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' के 150 साल पूरे होने के अवसर को भी समर्पित है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा कर देशवासियों से 15 अगस्त को अपने घरों पर तिरंगा फहराने और स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि देने की अपील की। पीएम मोदी ने कहा, आइए, 15 अगस्त 2026 का स्वतंत्रता दिवस आन-बान-शान से मनाएं, स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दें और विकसित भारत का संकल्प लें। हर घर तिरंगा, घर-घर तिरंगा, हर मन तिरंगा। आइए हर घर पर तिरंगा लहराइए। प्रधानमंत्री मोदी ने 9 अगस्त को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ङ्क पर भी हर घर तिरंगा अभियान को लेकर देशवासियों से जुड़ने की अपील की थी। उन्होंने कहा था कि तिरंगा देश के गर्व और गौरव का प्रतीक है और यह हर नागरिक को राष्ट्र के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने की प्रेरणा देता है। पीएम मोदी ने यह भी कहा था कि 15 अगस्त 2026 का स्वतंत्रता दिवस खास है, क्योंकि इसी वर्ष 'वंदे मातरम' की 150वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस समारोह में एक खास बदलाव देखने को मिलेगा। 15 अगस्त 2026 को लाल किले पर ध्वजारोहण के दौरान राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' भी गाया जाएगा। केंद्र सरकार के अनुसार, यह पहली बार होगा जब लाल किले के स्वतंत्रता दिवस समारोह में राष्ट्रगान के साथ राष्ट्रगीत भी प्रस्तुत किया जाएगा। इस वर्ष लाल किले के समारोह की थीम '2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवा शक्ति का योगदान' रखी गई है।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने बहुउद्देशीय मिनी स्टेडियम का किया लोकार्पण

■ नगरवासियों को मिलेंगी खेल एवं अन्य गतिविधियां संचालित करने की सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। उप मुख्यमंत्री तथा कांकेर जिले के प्रभारी मंत्री श्री अरुण साव ने आज कांकेर में तिरंगा यात्रा के समापन अवसर पर मेलाभाठा के समीप नवनिर्मित मिनी स्टेडियम एवं बहुउद्देशीय इनडोर हॉल का लोकार्पण किया। उन्होंने फुटबॉल को किक कर गोल दागकर खेल मैदान का शुभारंभ किया। श्री साव ने कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि तिरंगा यात्रा देश की स्वाधीनता, आत्मनिर्भरता और महान क्रांतिकारियों के अमर बलिदानों का पर्याय है। उनके सपनों को संजोकर व सहेजकर रखने की जिम्मेदारी आप सभी के कंधों पर है।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने नवनिर्मित मिनी स्टेडियम एवं बहुउद्देशीय इनडोर हॉल परिसर में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम में कहा कि जिन महान देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को वर्षों की गुलामी से आजादी दिलाई, उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। क्रांतिवीरों के बलिदान से मिली आजादी के बाद देश को आत्मनिर्भर, विश्व गुरू और सोने की चिड़िया बनाने में निश्चित तौर पर विद्यार्थियों की बड़ी भूमिका रहेगी। उन्होंने कहा कि इस मल्टीपरपज मिनी स्टेडियम के निर्माण से स्थानीय खेल प्रतिभाओं को व्यापक सुविधाएं मुहैया होंगी, साथ ही युवक-युवतियों को एक बेहतर प्लेटफॉर्म भी मिलेगा।

श्री साव ने बताया कि हाल ही में आयोजित कॉमनवेल्थ गेम्स में राजनांदगांव की बेटी ज्ञानेश्वरी यादव ने वेट-लिफ्टिंग में रजत पदक हासिल किया, जो पूरे प्रदेश के लिए गौरव की बात है। उम्मीद है कि कांकेर जिले की छिपी हुई खेल प्रतिभाओं के लिए यह मिनी स्टेडियम एक बेहतर प्लेटफॉर्म साबित होगा। विधायक श्री आशाराम नेताम ने कार्यक्रम में नगरवासियों को बधाई देते हुए खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने तथा नगर को स्वच्छ व सुंदर बनाने की अपील की। कांकेर जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती किरण नरेटी तथा नगर पालिका के अध्यक्ष श्री अरुण कौशिक ने भी नवनिर्मित मिनी स्टेडियम एवं इनडोर हॉल के लोकार्पण की बधाई देते हुए इसे कांकेर शहर के लिए बड़ी उपलब्धि बताया। कलेक्टर श्री निलेशकुमार महादेव क्षीरसागर भी लोकार्पण कार्यक्रम में मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने समाज सेविका मिनीमाता जी की पुण्यतिथि पर किया नमन

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद और समाजसेविका स्वर्गीय मिनीमाता जी की पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा है कि मिनीमाता जी ने अपना पूरा जीवन मानव सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने बाल विवाह और दहेज प्रथा के विरोध में समाज से लेकर संसद तक अपनी आवाज उठाई।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि समाज एवं महिलाओं के उत्थान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए मिनीमाता जी के नाम पर राज्य सरकार द्वारा राज्य अलंकरण पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है। उन्होंने कहा कि मिनीमाता जी का सेवाभावी व्यक्तित्व हम सभी को हमेशा प्रेरणा देता रहेगा।

ड्रिंक एंड ड्राइव पर सख्ती: सरप्राइज चेकिंग में 60 नशे में मिले

■ 18 बिना नंबर वाहन भी पकड़े, 78 पर कार्रवाई

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी में सड़क हादसों पर लगाम लगाने और यातायात नियमों का पालन कराने के लिए ट्रैफिक पुलिस ने ड्रिंक एंड ड्राइव के खिलाफ सघन जांच अभियान चलाया। 10 अगस्त की रात शहर के 9 प्रमुख चौक-चौराहों और संवेदनशील स्थानों पर हुई जांच में नशे की हालत में वाहन चलाते मिले 60 लोगों समेत कुल 78 वाहन चालकों पर वैधानिक कार्रवाई की गई। इनमें 18 बिना नंबर के वाहन भी शामिल हैं। अभियान अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त यातायात राम कुमार बर्मन और सभी सहायक पुलिस आयुक्त यातायात के नेतृत्व में चलाया गया। पुलिस टीम ने आधुनिक ब्रीथ एनालाइजर मशीनों से वाहन चालकों की जांच की। कार्रवाई में 37 कार, 34 दोपहिया, 4 टाटा एस पिकअप, एक ऑटो मैजिक और 2 ट्रक शामिल रहे। यातायात पुलिस के मुताबिक, ड्रिंक एंड ड्राइव के खिलाफ पूरे साल चलाए गए अभियान के तहत 2026 में अब तक 3842 वाहन चालकों पर कार्रवाई की जा चुकी है। पुलिस का कहना है कि अभियान का उद्देश्य सिर्फ चालान करना नहीं, बल्कि लोगों को नशे में वाहन चलाने के खतरों के प्रति जागरूक करना भी है।

पुलिस के अनुसार शराब या किसी नशीले पदार्थ के सेवन के बाद चालक की निर्णय लेने की क्षमता, प्रतिक्रिया का समय और वाहन पर नियंत्रण प्रभावित होता है।

पाट जात्रा पूजा विधान के साथ आज से शुरू होगा विश्व प्रसिद्ध बस्तर दशहरा

जगदलपुर (विश्व परिवार)। बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी को समर्पित विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक बस्तर दशहरा पर्व की शुरुआत बुधवार, 12 अगस्त को हरेली अमावस्या के अवसर पर पारंपरिक पाट जात्रा पूजा विधान के साथ होगी। मां दंतेश्वरी मंदिर प्रांगण में होने वाले इस महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजन के साथ ही 75 दिवसीय बस्तर दशहरा पर्व का विधिवत शुभारंभ होगा।

पाट जात्रा पूजा विधान के दौरान पारंपरिक मांझी-चालकी, मेम्बर-मेम्बरीन, पुजारी, पटेल, नाईक-पाईक एवं सेवादारों द्वारा रथ निर्माण के लिए औजार बनाने की ठुरलू खोटला रस्म अदा की जाएगी। बस्तर दशहरा समिति ने इस ऐतिहासिक आयोजन में मांझी-चालकी, मेम्बर-मेम्बरीन, पुजारी, पटेल, नाईक-पाईक, सेवादारों सहित गणमान्य नागरिकों एवं ग्रामीणों से उपस्थित होकर पाट जात्रा पूजा विधान में शामिल होने का आग्रह किया है। पाट जात्रा के साथ शुरू होने वाले 75 दिवसीय बस्तर दशहरा पर्व के दौरान विभिन्न पारंपरिक पूजा विधान और रस्में संपन्न होंगी।

लोकसभा में केरल का नाम बदलने वाला बिल पास

■ विपक्ष के सांसदों की लगातार नारेबाजी, अब 'केरलम' नाम से जाना जाएगा

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के सांसदों की लगातार नारेबाजी के बीच आज मंगलवार को 'केरल (नाम परिवर्तन) बिल, 2026' को ध्वनि मत से पास कर दिया गया। इस बिल में केरल राज्य का नाम बदलकर 'केरलम' करने का प्रस्ताव है। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने सदन में यह बिल पेश किया, जबकि विपक्षी सांसद 20 जुलाई को नीट प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई पर गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी और बयान की मांग करते हुए नारेबाजी करते रहे। सदन की अध्यक्षता कर रहे कृष्णा प्रसाद टेनेटी ने विपक्षी सांसदों से सदन को सुचारू रूप से चलने देने का आग्रह किया। हालांकि, हंगामा जारी रहा। नित्यानंद राय और संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने केरल का नाम बदलने वाले बिल पर चर्चा न करने के लिए विपक्ष की आलोचना की।

रिजिजू ने कहा, यह दुखद है कि केसी वेणुगोपाल जैसे वरिष्ठ कांग्रेस नेता भी इस बिल पर नहीं बोलेंगे। जब हंगामा नहीं थमा, तो बिना चर्चा के ही ध्वनि मत से बिल पास कर दिया गया। इससे पहले इस साल फरवरी में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 'केरल' का नाम बदलकर 'केरलम' करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। गौरतलब है कि केरल विधानसभा ने 24 जून, 2024 को 'केरल' का नाम बदलकर 'केरलम' करने का प्रस्ताव पास किया था।

नकली नोट बनाने और खपाने वाले गिरोह का पर्दाफाश

■ तीनों आरोपियों से कुल 12.5 लाख रुपये के नकली नोट, कलर प्रिंटर, मोबाइल एवं घटना में प्रयुक्त कार बरामद।

कबीरधाम (विश्व परिवार)। पुलिस को जिले में धोखाधड़ी, जालसाजी एवं नकली मुद्रा के अवैध कारोबार में संलिप्त व्यक्तियों को गिरफ्तार करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। थाना बोडला अंतर्गत चौकी पोंडी क्षेत्र में नकली नोटों की डिलीवरी के मामले मे तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस अधीक्षक कबीरधाम श्री जितेंद्र कुमार यादव (भा.पु.से.) के निर्देशन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री हेमसागर सिदार एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अमित पटेल के मार्गदर्शन तथा पुलिस अनुविभागीय अधिकारी बोडला श्री अखिलेश कौशिक के पर्यवेक्षण में चौकी पोंडी पुलिस एवं साइबर टीम कबीरधाम द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए नकली नोट तैयार करने एवं खपाने वाले आरोपियों को पकड़ कर वैधानिक कार्यवाही की गई है ।

3.75 लाख रुपये की उधारी लौटाने के नाम पर नकली नोटों की डिलीवरी

प्रकरण में प्रार्थी दिनेश कुमार यादव, निवासी ग्राम कमराखोल, थाना कुकदुर, जिला कबीरधाम द्वारा चौकी पोंडी में रिपोर्ट दर्ज कराया गया कि उसके द्वारा अप्रैल 2026 में घुरवा राम को 3,75,000/ रुपये उधार दिए गए थे, जिसके संबंध में एग्रीमेंट भी कराया गया था।

उधारी की रकम वापस मांगने पर घुरवा राम द्वारा प्रार्थी को रकम वापस करने का आश्वासन दिया गया। दिनांक 09.08.2026 को घुरवा राम ने प्रार्थी को बताया कि वह सतीश कुमार के माध्यम से रकम भिजवा रहा है तथा ग्राम पोंडी स्थित शराब भट्टी के आगे रकम लेने के लिए बुलाया।

प्रार्थी दिनेश कुमार यादव अपने परिचित कैलाश चंद्रवंशी के साथ रात्रि लगभग 09:00 बजे ग्राम पोंडी शराब भट्टी के आगे पहुंचा। वहां सतीश कुमार एवं उसके एक अन्य साथी द्वारा काले रंग के बैग में रकम दी गई।

रकम की जांच करने पर नोट संदिग्ध पाए गए। बैग खोलकर देखने पर उसमें 500-500 रुपये के कुल 4,50,000 रूपये नकली नोट मिले।

इंटरहाउस 3.0 में गूंजा युवा जोश, छह हाउसों ने दिखाया प्रतिभा और टीम भावना का शानदार संगम

रायपुर (विश्व परिवार)। जेसीआई रायपुर यूथ कैपिटल द्वारा आयोजित इंटरहाउस 3.0 का भव्य आयोजन 9 अगस्त को विमतारा में हुआ, जिसने पूरे दिन युवा ऊर्जा, उत्साह, रचनात्मकता, रणनीति, नेतृत्व और टीम भावना का शानदार प्रदर्शन प्रस्तुत किया। छह हाउसों के बीच आयोजित इस बहुप्रतीक्षित मुकाबले में प्रतिभागियों ने पाँच रोमांचक प्रतियोगिताओं–मास्टर शेफ़ मिस्टर एंड मिस यूथ 2026, आर्ट अटैक, बाज़ार और क्लैश ऑफ क्लैन्स–में अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन किया। सुबह से लेकर अंतिम मुकाबले तक विमतारा का वातावरण जोश, तालियों और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से गूंजता रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पीपीपी जेएफ़आर श्री राजेश अग्रवाल की गरियामयी उपस्थिति व उनके मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन ने प्रतिभागियों तथा आयोजन समिति का उत्साहवर्धन किया। पाँचों प्रतियोगिताओं ने प्रतिभागियों की अलग-अलग क्षमताओं को परखा। मास्टर शेफ में केवल 40 मिनट में अप्रत्याशित सामग्री से व्यंजन तैयार करने की चुनौती दी गई, जिसका मूल्यांकन सरबजीत सिंह एवं प्रभा जैन ने किया।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम–सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है, कि **सामान्य आवास योजनांतर्गत सेक्टर-01, शंकर नगर रायपुर में स्थित वाणिज्यिक शॉप एवं स्टूडियो अपार्टमेंट में स्टूडियो अपार्टमेंट क्रमांक-518 पंचम तल श्री एम.एस. परमार,** के नाम से ऑफर आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा फ्लैट की सेलडीड **दिनांक 06.07.2021** को पंजीकृत कराने के उपरांत पूर्ण मूल्य जमा कर इस कार्यालय के पत्र **क्रमांक 2327 दिनांक 16.07.2021** के माध्यम से आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री एम.एस. परमार पिता स्व. श्री विनयचंद्र सिंह परमार निवासी-मकान नं. बी/ 23, वालफोर्ट सिटी, भाठागांव रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त फ्लैट को **श्रीमती अल्पा जैन पति श्री सुधांशु जैन, निवासी-फ्लैट नं. 203, पलास, डी.एम. वाटिका, कचना रोड़ खम्हारडीह, रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्धशासकीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचन प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधेहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./34273/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34273
वार्ड का नाम- 17 ठक्कर बापा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 17 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR108B00590** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PAWAN BAGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ISHWAR BAGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANJU SHENDE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O DINESH SHENDE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **01 MALMA VIKRAYA IKRARNAMA 02 SHAPATH PATRA 03 TAX RASHI 04 SAHMATI PATRA E AADHAR PAR** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अंशुल शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./32699/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 32699
वार्ड का नाम-44-स्वामी विवेकानंद सदर बाजार वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 44 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR739C00223** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAJESH KUMAR JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **....** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **राजेश कुमार जैन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. मनमोहन चंद्र जैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत वसीयतनामा** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./34363/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34363
वार्ड का नाम- 60 चंद्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR653H00039** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KALI RAM BHARTI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **JAMUNA BHARTI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O LT. KALIRAM BHARTI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **SHAPATH PATRA, DEATH CERTIFICATE OR PANCHNAMA** / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./34355/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34355
वार्ड का नाम- 59 मोरेश्वर राव गद्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR653K00102** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SANJAY JAGAT** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHIVAJI, BHULU JAGAT** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SANJAY NAYAK** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O BHULU NAYAK** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **SAHMATI PATRA OR SHAPATH PATRA** / अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./34349/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34349
वार्ड का नाम- 59 मोरेश्वर राव गद्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 59 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR653D00011** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NEHRU RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **FIRATRAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MITHLESH SAHU** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O SAWAN SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34362/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34362
वार्ड का नाम-27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.-**RPR737E00302** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MEENA, RICHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PAWAN ROCHALANI, MUKESH ROKHALANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री फिरंदलाल पिता स्व. श्री प्रभुमल किंगरानी 2. श्रीमती जया बाई किंगरानी पति- श्री फिरंदमल किंगरानी 3. श्री कविनाथ किंगरानी पिता -श्री फिरंदलाल किंगरानी 4. श्री महेन्द्र कुमार किंगरानी पिता - श्री फिरंदलाल किंगरान** पिता/पति, श्री/श्रीमती ... ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34316/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34316
वार्ड का नाम-35- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 35 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436I00018** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **INDERLAL TALREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHAMANDAS TALREJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **जेनिथ इंटरप्राइजेस द्वारा प्रोपराइटर - श्री पुनीत काबरा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **श्री विश्वनाथ काबरा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34315/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34315
वार्ड का नाम-35- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 35 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436I00018** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **INDERLAL TALREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHAMANDAS TALREJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **जेनिथ इंटरप्राइजेस द्वारा प्रोपराइटर - श्री पुनीत काबर** पिता/पति, श्री/श्रीमती **श्री विश्वनाथ काबरा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34314/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34314
वार्ड का नाम-35- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 35 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436J00220** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KAMLA KUKREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **विनय कुकरेजा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. थावर दास कुकरेजा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, रसीद, मृत्यु प्रमाण पत्र, पुरानी रजिस्ट्री** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34276/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34276
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737A00270** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **GULBAGAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **मोहम्मद अफसर खान** पिता/पति, श्री/श्रीमती **मरहुम सब्बीर खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, बैनामा, रसीद, मृत्यु प्रमाण पत्र** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34290/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34290
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737A0209A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RUPCHAND JASWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री श्याम जसवानी 2. ओम प्रकाश जसवानी 3. रमेश जसवानी 4. राधेश्याम जसवान** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. रूपचंद जसवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, सत्यापन, मृत्यु प्रमाण पत्र बैनामा** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34332/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34332
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220J00491** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SURESH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NANAK RAM CHHABDA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती विद्या बाई छाबड़** पिता/पति, श्री/श्रीमती **श्री सुदामा दास छाबड़** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./34331/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34331
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220J00491** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SURESH KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **NANAK RAM CHHABDA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. शिवम अग्रवाल 2. प्रियांशु अग्रवाल दोनों पिता - श्री मनोज अग्रवाल 3. योगेश अग्रवाल पिता - श्री प्रमोद कुमार अग्रवाल** पिता/पति, श्री/श्रीमती **...** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34247/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34247
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328T00300** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KSHITIJ SINGH THAKUR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PRABHAT KUMAR THAKUR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **विजय कुमार सोनी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **महेन्द्र कुमार सोनी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34245 / न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34245
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328I00102** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUNIL KHADUJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAJENDRA KHADUJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **पार्वती भारती** पिता/पति, श्री/श्रीमती **योगेश कुमार भारती** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34244/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34244
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328M00246** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DASHARATH KUKREJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANIK RAM KUKREJA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **जेम्स कुमार बेक** पिता/पति, श्री/श्रीमती **जॉन बेक** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34195/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34195
वार्ड का नाम- 10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227W00389** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **AMISHA AGARWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHUBHAM AGARWAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **नरेश कुमार सोमानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **गौरी शंकर सोमानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34194/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34194
वार्ड का नाम- 51 - लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 51 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328Y00110** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DEVYANI BISEN, AJAY SINGH BISEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **AJAY SINGH BISEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. आभा राणा 2. रेखलाल राणा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. रेखलाल राणा 2. नेउलाल राणा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34193/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34193
वार्ड का नाम- 51 - लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 51 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328Y00100** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **POOJA RAMANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **VIJAY RAMANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. अजय सिंह बिसेन 2. देवयानी बिसेन** पिता/पति, श्री/श्रीमती **1. जगपाल सिंह बिसेन 2. अजय सिंह बिसेन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. / 34140 / न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34140
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328I00080** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BHAWAR LAL SEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE H.P. SEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **जय कुमार सुगंध** पिता/पति, श्री/श्रीमती **प्रकाश सुगंध** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34139/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34139
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328S00008** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NAGENDRA KUMAR PANDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE SARVAGYAN PANDA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **रत्ना चारी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **दिव्य किरण** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34082/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34082
वार्ड का नाम- 07 - कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 07 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR226C0110I** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAVI MIRGHANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SURESH KUMAR MIRGHANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ममता पारख** पिता/पति, श्री/श्रीमती **विकास पारख** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34081/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34081
वार्ड का नाम- 07 - कुशाभाऊ ठाकरे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 07 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR226C0110Y** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SURESH KUMAR MIRGHANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE SHOBRAJ MAL MIRGHANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ममता पारख** पिता/पति, श्री/श्रीमती **विकास पारख** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

बस्तर में विकास, देश मे विश्वास स्थापित करेगी 'बस्तर तिरंगा यात्रा' : विजय शर्मा

■ उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा : नक्सलवाद के खात्मे के बाद 90 से अधिक गाँवों में पहली बार शान से लहराएगा राष्ट्रध्वज

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री/गृह मंत्री विजय शर्मा ने कहा है कि देश की आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के उपरांत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर शुरू हुए 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक बस्तर सम्भाग में 12 अगस्त से एक अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक 'बस्तर तिरंगा यात्रा' का आगाज होने जा रहा है। श्री शर्मा ने मंगलवार को आहूत पत्रकार वार्ता को सम्बोधित करते हुए इस तीन दिवसीय तिरंगा यात्रा के पूरे मार्ग, इसके विस्तृत उद्देश्य तथा बस्तर की बदलती तस्वीर की रूपरेखा साझा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने स्पष्ट संदेश दिया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में नक्सलवाद के विरुद्ध चलाई गई निर्णायक मुहिम के सुखद परिणाम सामने आए हैं। 31 मार्च 2026 के बाद आ रहे इस पहले राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस पर बस्तर के कोने-कोने तक भारत का तिरंगा पूरी आन, बान और शान से लहराएगा। श्री शर्मा ने बताया कि यह तिरंगा यात्रा 12 अगस्त से प्रारंभ होकर 14 अगस्त तक बस्तर के अति-संवेदनशील और भीषण नक्सल प्रभावित रहे इलाकों से गुजरेगी। यह यात्रा 12 अगस्त को नारायणपुर (दोपहर 12:00 बजे) से प्रस्थान कर विभिन्न गाँवों से गुजरते हुए 150

किमी की यात्रा पूर्ण कर दन्तेवाड़ा पहुँचेगी। 13 अगस्त को सुबह दन्तेवाड़ा से स्थानीय नागरिकों और जवानों के साथ बीजापुर के लिए प्रस्थान करेगी। 14 अगस्त को सुबह बीजापुर से प्रस्थान कर आवापल्ली, उसुर, कलगम, ताड़पाला होते हुए कारिकुत्तलु पहाड़ी के नीचे यात्रा का समापन होगा।

खौफ के गढ़ में तिरंगे की गूंज

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि जनवरी 2024 से लेकर अब तक बस्तर के अनेक दुर्गम गाँवों में लगातार राष्ट्रीय पर्वों पर ध्वजारोहण किया गया है। इस स्वतंत्रता दिवस पर बस्तर सम्भाग के 90 से अधिक ऐसे गाँव हैं, जहाँ आजादी के बाद पहली बार इस स्वाधीनता दिवस पर तिरंगा लहराया जाएगा। श्री शर्मा ने इस झूठे नैरेटिव को सिरे से खारिज किया कि 'बस्तर में शांति नहीं आई है या सुरक्षा बलों को हटा देना चाहिए'। आज बस्तरवासी खुद को सही मायनों में स्वतंत्र महसूस कर रहे हैं और अब कोई ऐसी ताकत नहीं बची जो भारत के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान कर सके।

ऐतिहासिक नक्सल हिंसा के प्रमुख स्थलों पर शहीदों को श्रद्धांजलि

उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि बस्तर तिरंगा यात्रा नक्सली हिंसा में प्राण गँवाने वाले निर्दोष ग्रामीणों और वीर जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक संकल्प है। यात्रा के दौरान वह स्वयं (स्वयं श्री शर्मा) उन प्रमुख 31 स्थानों पर पहुँचेंगे जहाँ माओवादियों ने जघन्य घटनाओं को अंजाम दिया था। चिंगावरम में नक्सलियों ने 31 निर्दोष लोगों की नृशंस हत्या की थी। एर्राबोर में 220 घरों को फूँक दिया गया था और 33 निर्दोष ग्रामीणों को मौत के घाट उतारा गया था। मणीकोंटा में 15 आदिवासी भाइयों की हत्या की गई थी। इन स्थानों पर पहुँचकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाएगी।

हरेली हमारी कृषि संस्कृति, प्रकृति संरक्षण और समृद्धि का पर्व : गुरु खुशवंत साहेब

■ कौशल विकास मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने प्रदेशवासियों को दी हरेली तिहार की शुभकामनाएं

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन के कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार व अनुसूचित जाति मंत्री श्री गुरु खुशवंत साहेब ने प्रदेशवासियों को छत्तीसगढ़ के प्रथम लोकपर्व हरेली तिहार की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

मंत्री श्री गुरु खुशवंत साहेब ने कहा कि हरेली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की माटी, किसान, प्रकृति और हमारी समृद्ध लोक परंपराओं से जुड़ी भावनाओं का उत्सव है। छत्तीसगढ़ की पहचान कृषि प्रधान प्रदेश के रूप में रही है और हरेली तिहार इसी कृषि संस्कृति के प्रति सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि हरेली के दिन किसान भाई अपने नांगर (हल),

कृषि औजारों एवं खेती-किसानी में उपयोग होने वाले उपकरणों की पूजा करते हैं। यह परंपरा हमें याद दिलाती है कि अन्नदाता किसान और कृषि हमारे सामाजिक एवं आर्थिक जीवन की मजबूत नींव हैं। हरेली पर्व हमें प्रकृति के संरक्षण, हरियाली बढ़ाने और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने का संदेश भी देता है।

किसानों को सशक्त करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

मंत्री श्री गुरु खुशवंत साहेब ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार किसानों के हित में निरंतर महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है। किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिले, उनकी आय बढ़े और खेती-किसानी को अधिक लाभकारी बनाया जा सके, इस दिशा में सरकार पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार की किसान हितैषी नीतियों का सकारात्मक प्रभाव प्रदेश के ग्रामीण अर्थतंत्र पर दिखाई दे रहा है। किसान सशक्त होंगे तो गांव मजबूत होंगे और गांव मजबूत होंगे तो छत्तीसगढ़ आत्मनिर्भर एवं समृद्ध बनेगा।

युवाओं के कौशल और रोजगार पर सरकार का विशेष फोकस

मंत्री गुरु खुशवंत साहेब ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के साथ-साथ प्रदेश के युवाओं को कौशल, तकनीकी शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के लिए भी प्रतिबद्ध है। आज के बदलते दौर में युवाओं को उनकी रुचि एवं क्षमता के अनुरूप आधुनिक कौशल से जोड़ना आवश्यक है।

जनदर्शन में पहुंची दृष्टिबाधित प्रियंका को मिला स्मार्ट फोन, सुरों की दुनिया में नाम रोशन करने की दी शुभकामनाएं

■ कलेक्टर कुलदीप शर्मा की संवेदनशील पहल

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर कुलदीप शर्मा की संवेदनशीलता और त्वरित निर्णय से आज एक बार फिर जनदर्शन में आए एक जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। साप्ताहिक जनदर्शन कार्यक्रम के दौरान जब दृष्टबाधित बालिका प्रियंका अपनी समस्या लेकर पहुंची, तो कलेक्टर ने न सिर्फ उसकी पूरी बात आत्मीयता से सुनी, बल्कि उसकी संगीत के प्रति रुचि को देखते हुए तत्काल उसे एक आधुनिक स्मार्ट फोन प्रदान किया। इस दौरान प्रियंका ने अपनी सुरीली आवाज में देशभक्ति गीत भी सुनाई। कलेक्टर ने प्रियंका के.मधुर आवाज की सराहना करते हुए उज्जवल भविष्य और सुरों की दुनिया में जिले का नाम रोशन करने के लिए अपनी ढेरों शुभकामनाएं भी दीं।

कसडोल विकासखंड के ग्राम कटगी निवासी प्रियंका बघेल बचपन से ही दृष्टिबाधित हैं। उन्होंने बताया कि बागबाहरा स्थित दृष्टिबाधित बच्चों के विद्यालय से हाई स्कूल तक की पढ़ाई पूरी की है। आगे की पढ़ाई के लिये इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ से संगीत

विषय में ग्रेजुएशन करना चाहती है और एडमिशन भी लिया है।आगे की पढ़ाई और ऑनलाइन संगीत कक्षाओं के लिए मोबाइल फोन की आवश्यकता थी। इसी जरूरत को लेकर प्रियंका ने करीब एक सप्ताह पहले कलेक्टर के जनदर्शन में आवेदन देकर मदद की गुहार लगाई थी। सप्ताहभर में कलेक्टर से मिली मदद-जनदर्शन में पहुंची प्रियंका ने कलेक्टर को बताया कि उसे बचपन से ही गाने का और संगीत सीखने का गहरा शौक है। दृष्टिबाधित होने के कारण उसे संगीत की बारीकियों को सीखने, नए गानों को सुनने और उनका अभ्यास करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। आर्थिक तंगी की वजह से उसका परिवार उसे टच-स्क्रीन स्मार्ट फोन दिलाने में असमर्थ था, जो आज के दौर में दृष्टिबाधितों के लिए 'वॉइस असिस्टेंस' के जरिए पढ़ाई और संगीत सीखने का एक बड़ा माध्यम बन चुका है।

हरेली तिहार के अवसर पर महापौर मीनल चौबे, सभापति सूर्यकान्त राठौड़ ने दी शुभकामनाएं

■ नगरवासियों से हरेली तिहार पर रायपुर को हरित शहर बनाने सुरक्षित स्थानों पर अधिकाधिक पौधे रोपित कर उनकी देखभाल एवं सुरक्षा अपनी सन्तानों की भांति करने का संकल्प लेने की विनम्र अपील

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी शहर की प्रथम नागरिक रायपुर नगर पालिक निगम की महापौर मीनल चौबे, नगर पालिक निगम के सभापति सूर्यकान्त राठौड़, नगर पालिक निगम संस्कृति विभाग के अध्यक्ष अमर गिदवानी, स्वास्थ्य विभाग अध्यक्ष गायत्री चंद्राकर, पर्यावरण एवं उद्यानिकी विभाग अध्यक्ष भोलाराम साहू सहित समस्त एमआईसी सदस्यों, सभी जोन अध्यक्षगणों, वार्ड पार्षदों, एल्डरमैनों ने समस्त नगरवासियों को पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण, कृषि क्षेत्र की समृद्धि एवं खुशहाली के प्रति समर्पित हरेली तिहार दिनांक 12 अगस्त 2026 बुधवार के अवसर की अग्रिम हार्दिक शुभकामनायें देते हुये समस्त

नगरवासियों के जीवन में सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शान्ति प्रदान करने राजधानी शहर रायपुर नगर पालिक निगम क्षेत्र सहित सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य क्षेत्र में सुख, समृद्धि हरियाली और खुशहाली लाने कार्य करने सकारात्मक प्रेरणा शक्ति प्रदान करने परमपिता परमेश्वर के दिव्य श्रीचरणों में सामूहिक विनम्र प्रार्थना की है।

महापौर मीनल चौबे, सभापति सूर्यकान्त राठौड़, संस्कृति विभाग अध्यक्ष अमर गिदवानी, स्वास्थ्य विभाग अध्यक्ष गायत्री चंद्राकर, पर्यावरण एवं उद्यानिकी विभाग अध्यक्ष भोलाराम साहू सहित समस्त एमआईसी सदस्यों, जोन अध्यक्षगणों, वार्ड पार्षदगणों, एल्डरमैनों ने कहा है कि हरेली तिहार पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण, कृषि क्षेत्र की समृद्धि एवं खुशहाली के प्रति समर्पित छत्तीसगढ़ राज्य का पारम्परिक तिहार है. उक्त दिन सभी नगरवासियों को रायपुर को हरित शहर बनाने अधिकाधिक स्थानों पर सुरक्षित स्थानों पर पौधरोपण कर लगाए गए पौधों की सुरक्षा एवं देखभाल अपनी सन्तानों की भांति करने का संकल्प समाजहित में पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से अवश्य लेना चाहिए.

महापौर मीनल चौबे, सभापति सूर्यकान्त राठौड़, संस्कृति विभाग अध्यक्ष अमर गिदवानी, स्वास्थ्य विभाग अध्यक्ष गायत्री चंद्राकर, पर्यावरण एवं उद्यानिकी विभाग अध्यक्ष भोलाराम साहू सहित समस्त एमआईसी सदस्यों, जोन अध्यक्षगणों, वार्ड पार्षदों, एल्डरमैनों ने समस्त नगरवासियों से स्वच्छ भारत मिशन अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय स्वच्छ सर्वेक्षण वर्ष 2025- 26 में रायपुर शहर को राष्ट्र में प्रथम स्वच्छ रैंकिंग दिलवाने अधिक से अधिक संख्या में स्वच्छता एप में स्वच्छता फीडबैक देकर अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज करने का सामूहिक संकल्प लेने की एक बार पुन: विनम्र अपील की है।

'मैक विद्यार्थियों ने लहराया परचम, 10 विद्यार्थियों ने हासिल किए विश्वविद्यालय मेरिट में स्थान'

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज, समता कॉलोनी रायपुर के विद्यार्थियों ने पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय की सत्र 2024-25 की मेरिट सूची में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। विभिन्न संकायों के कुल 10 विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय की टॉप मेरिट सूची में स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध किया है कि महाविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में निरंतर नए आयाम स्थापित कर रहा है। कॉलेज में 15 अगस्त को मेरिट सूची में आये 10 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान कर सम्मनित किया जायेगा।

इंटीरियर डिजाइन विभाग की छात्रा सुनिधि सोमानी ने बी.वॉक. इंटीरियर डिजाइन में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक हासिल किया। इसी विभाग के छात्र ऋषि ए. गवरी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर विभाग का गौरव बढ़ाया।

वाणिज्य विभाग के विद्यार्थियों ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए हिमांशी डागा (एम.कॉम.) ने द्वितीय स्थान, कामना दुबे (एम.कॉम.) ने तृतीय स्थान, तथा पूर्वी दहिया (बी.कॉम.) ने

चतुर्थ स्थान, कली बजाज (बी.कॉम.) ने षष्ठम् स्थान प्राप्त किया। प्रबंधन विभाग से भूमि अग्रवाल ने द्वितीय स्थान, पारिधि अग्रवाल ने पंचम स्थान तथा प्रखर गुप्ता ने सप्तम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय की उपलब्धियों में नया अध्याय जोड़ा। कंप्यूटर एप्लीकेशन विभाग की छात्रा मुस्कान अग्रवाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर विभाग का नाम रोशन किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के चेयरमेन डॉ. रमेश अग्रवाल, पूर्व चेयरमेन राजेश अग्रवाल, सचिव सरिता अग्रवाल, प्राचार्य डॉ. जैस्मिन जोशी एवं उप-प्राचार्य डॉ. श्वेता तिवारी ने सभी मेधावी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं।

बधमरा रेलवे गेट अंडरपास सड़क मार्ग आवागमन रहेगा बंद

रायपुर। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के रायपुर मंडल अंतर्गत डीडी-48 बधमरा रेलवे फाटक अंडरपास के पास रेलवे कॉलोनी से वर्षा जल निकासी हेतु RRC Hume पाइप लगाया जाएगा । इस कार्य के दौरान सड़क मार्ग पर आवागमन में असुविधा की संभावना को देखते हुए 12 अगस्त 2026, बुधवार को सुबह 9:00 बजे से शाम 6:00 बजे तक उक्त सड़क मार्ग को अस्थायी रूप से बंद रखा जाएगा।

यह कार्य पड़कीभाट से पाररास बाईपास मार्ग पर स्थित रेलवे फाटक क्रमांक डीडी-48 बधमरा गेट के पास किया जाएगा। संबंधित सड़क मार्ग बालोद-बधमरा के मध्य किलोमीटर 927/10-11 पर स्थित है।

स्वतंत्रता दिवस को लेकर भिलाई निगम ने तेज की सफाई व्यवस्था

■ महापुरुषों की प्रतिमाओं की कराई जा रही साफ-सफाई

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगर पालिक निगम भिलाई द्वारा शहर में विशेष साफ-सफाई अभियान चलाया जा रहा है। निगम द्वारा शहर में स्थापित सभी महापुरुषों की प्रतिमाओं की साफ-सफाई एवं धुलाई का कार्य कराया जा रहा है, ताकि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रतिमाएं स्वच्छ एवं आकर्षक नजर आएं।

इसके साथ ही शहर के प्रमुख चौक-चौराहों, सार्वजनिक स्थलों एवं आसपास के क्षेत्रों में भी विशेष सफाई कराई जा रही है। निगम के सफाई कर्मचारियों द्वारा सड़कों, चौक-चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों से कचरा हटाकर साफ-सफाई की जा रही है। स्वतंत्रता दिवस के राष्ट्रीय पर्व को ध्यान में रखते हुए निगम प्रशासन द्वारा शहर की स्वच्छता एवं सौंदर्य व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं।

मिनी माता की पुण्यतिथि पर दी श्रद्धांजलि

■ भाजपा प्रदेश भाजपा कार्यालय में वरिष्ठ नेताओं ने अर्पित की पुष्पांजलि

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के कुशाभाऊ ठाकरे परिसर स्थित प्रदेश कार्यालय में महान समाजसेविका और छत्तीसगढ़ की प्रथम महिला सांसद स्वर्गीय मिनी माता की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि एवं माल्यार्पण कर उन्हें नम आँखों से श्रद्धापूर्वक याद किया। इसके साथ ही पंडरी रायपुर स्थित मिनीमाता की प्रतिमा पर भी पुष्पांजलि अर्पित की गई।

आयोजन के दौरान उपस्थित भाजपा पदाधिकारियों ने स्व. मिनी माता द्वारा समाज सेवा, शोषितों व वंचितों के उत्थान तथा छत्तीसगढ़ के विकास के लिए दिए गए उल्लेखनीय योगदान का स्मरण किया। इस श्रद्धांजलि सभा में मुख्य रूप से प्रदेश महामंत्री डॉ. नवीन मार्कण्डेय, प्रदेश मंत्री अमित साहू और प्रदेश कार्यालय मंत्री अशोक बजाज, कृतिका जैन, अमर गिदवानी, संगीता शर्मा, सविता चंद्राकर, राजू राघवानी, प्रीति परगनिहा, रंजीता शर्मा, मिली बनर्जी, बसंत बाघ, ओमेश जीभेकर, पंकज जगत, खेमलाल कोसले, सहित भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता काफी संख्या में उपस्थित रहे।

मंत्री कश्यप व अनुज शर्मा ने 228 हितग्राहियों को बांटे 1 करोड़ रुपए से अधिक के अग्रिम चेक

■ छत्तीसगढ़ में औषधीय खेती की बड़ी क्रांति

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड, रायपुर द्वारा औषधीय पादप कृषकों के कृषिकरण हेतु 'अग्रिम प्रोत्साहन राशि वितरण कार्यक्रम' का भव्य आयोजन किया गया। इस गरिमामयी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वन मंत्री केदार कश्यप, विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक अनुज शर्मा एवं राज्य औषधीय पादप बोर्ड के अध्यक्ष विकास मरकाम ,उपाध्यक्ष अंजय शुक्ला उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने कुल 228 हितग्राहियों को 1,00,20,492 रुपये (एक करोड़ बीस हजार चार सौ बयानबे रुपये) की राशि का अग्रिम भुगतान चेक के माध्यम से किया।

कस्टम फार्मिंग, अनुबंध खेती और अभिसरण मॉडल पर जोर

बोर्ड द्वारा राज्य में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कस्टम फार्मिंग, अनुबंध खेती (कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग) एवं अभिसरण (कन्वर्जेंस) मॉडल को तेजी से लागू किया जा रहा है। इस विशेष पहल के तहत गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही (जी.पी.एम.) जिले में कस्टम फार्मिंग तथा धमतरी व नारायणपुर जिलों में अनुबंध खेती एवं कस्टम फार्मिंग के माध्यम से औषधीय पौधों के कृषिकरण कार्य को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वन मंत्री केदार कश्यप ने कहा, 'राज्य सरकार छत्तीसगढ़ की पारंपरिक स्वास्थ्य परंपराओं को सहेजने और औषधीय पौधों की खेती को किसानों के लिए लाभकारी बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।'

बीरगांव में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में निकाली गई तिरंगा यात्रा रैली

बीरगांव (विश्व परिवार)। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में नगर पालिक निगम बीरगांव द्वारा देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। रैली का नेतृत्व नगर पालिक निगम बीरगांव के आयुक्त श्री युगल किशोर उर्वशा ने किया।

तिरंगा रैली नगर पालिक निगम कार्यालय से प्रारंभ होकर बुधवारी बाजार रोड तक निकाली गई। इस दौरान निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के उत्साह के साथ रैली में शामिल हुए।

रैली के माध्यम से नागरिकों में राष्ट्रप्रेम, एकता एवं स्वतंत्रता दिवस के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में नगर पालिक निगम बीरगांव के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

3870 करोड़ के शराब ओवर रेटिंग घोटाले की जांच कब करेगी ईडी? : दीपक बैज

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश में शराब धड़ल्ले से ओवर रेट में बेची जा रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि इस पूरे खेल को सत्ता का संरक्षण मिला हुआ है। शराब की ओवर रेटिंग सरकार में बैठे हुए लोग करा रहे है। हर ब्रांड की शराब में 10 से 60 रू. तक प्रति बोतल वसूला जा रहा था। सरकारी आंकड़ों में प्रतिदिन शराब का विक्रय 28 लाख 65 हजार बोतल है, हर बोतल में 10 से 60 रू. अधिक वसूला जा रहा है, 4 करोड़ 29 लाख प्रतिदिन अवैध वसूली, महिनें का 129 करोड़, 1548 करोड़ सालाना, विगत ढाई साल में 3870 करोड़ का

शराब ओवर रेटिंग घोटाला इस सरकार ने किया गया है। ईडी बताये कि 3870 करोड़ के शराब घोटाले की जांच कब करेगी ?

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि शराब के काऊंटर में बैठे लोग दावा कर रहे है कि शराब का पैसा ऊपर तक जा रहा था। यह मामला मीडिया में आया और जनता ने विरोध किया तब जाकर कुछ अधिकारियों को सस्पेंड करने की कार्यवाही की गयी। अधिकारी तो सरकार के निर्देश पर काम कर रहे थे उन्हे बलि का बकरा बना दिया गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि पूरे प्रदेश में संगठित शराब घोटाला चल रहा। हजारों करोड़ रूपये वसूली हो रही है। इस मामले की उच्च स्तरीय जांच होगी तब पता चलेगा कितने बड़े-बड़े लोग शामिल है। कांग्रेस पार्टी मांग करती है कि भाजपा के सरकार में शराब घोटाला हुआ है ईडी, सीबीआई जांच करने से क्यों घबरा रही है ?

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा सरकार नकली मिलावटी और अवैध शराब को बिकवा रही है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर, बुधवार 12 अगस्त 2026

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

समावेशी, पारदर्शी सरकारी खरीद का बेहतरीन प्लेटफॉर्म है जेम

श्री पीयूष गोयल
लेखक केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री हैं

सरकारी खरीद के लिए सरकार का ई-मार्केटप्लेस (जेम) वैश्विक स्तर पर एक पारदर्शी, समावेशी और कुशल प्लेटफॉर्म के रूप में उभरा है, जो 1.37 लाख सरकारी खरीदारों को 25 लाख विक्रेताओं और सेवा प्रदाताओं से जोड़ता है। जेम प्लेटफार्म की विशेषता है कि यह खरीद से जुड़ी सभी प्रमुख गतिविधियों को एक बड़े डिजिटल मार्केटप्लेस में एकीकृत करता है। यह वैश्विक सर्वोत्तम तौर-तरीकों को सरकार के समावेशी विकास के साथ जोड़ता है, जिससे यह पीएम मोदी के विकासित भारत 2047 के विजन को आगे बढ़ाने वाला इंजन बन जाता है। 2016 में पीएम द्वारा इस परिवर्तनकारी डिजिटल पहल की शुरुआत के एक दशक में, जेम ने भ्रष्टाचार को मिटाकर और स्टार्टअप, एमएसएमई, महिला उद्यमियों और छोटे शहरों के व्यवसायों को बढ़ावा देकर, सरकारी खरीद में क्रांति ला दी है। उपयोगकर्ता-अनुकूल यह प्लेटफ़ॉर्म वास्तव में एक रत्न है, जिसने विवादित आपूर्ति और निपटान महानिदेशालय की जगह ली है, जिसकी प्रणालियाँ अस्पष्ट और गैर-प्रतिस्पर्धी थीं। इससे खरीदारी प्रणाली के केवल कुछ सुविधा-प्राप्त लोगों को ही अनुचित फ़ायदा मिलता था। यह उचित है कि वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय का नया, आधुनिक कार्यालय, वाणिज्य भवन, उसी ज़मीन पर बना है, जहाँ कभी वह पुरानी और संदिग्ध प्रतिष्ठा वाली संस्था हुआ करती थी। वाणिज्य और उद्योग के मंत्री के रूप में, मुझे गर्व है कि जेम, जिसे 9 अगस्त 2016 को लॉन्च किया गया था, अपनी शानदार सेवा के दस साल पूरे कर रहा है। यह सिर्फ आंकड़ों का जश्न मनाने वाला पड़ाव नहीं है; बल्कि यह इस बात में एक बुनियादी और सफल बदलाव है कि कैसे सरकारी खरीद देश के निर्माण में योगदान देती है।

पारदर्शिता, व्यवसाय करने में आसानी

उत्पाद खोजने और बोली लगाने से लेकर अनुबंध देने और भुगतान करने तक, पूरी खरीद प्रक्रिया को डिजिटल बनाकर जेम ने मनमाने फैसलों को खत्म किया है, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है और लोगों के भरोसे को मजबूत किया है। हर लेन-देन का एक डिजिटल रिकॉर्ड बनता है जिसकी जांच की जा सकती है; इससे जवाबदेही बढ़ती है और सरकारी खरीद के प्रति निष्ठा मजबूत होती है। जेम पीएम मोदी के व्यवसाय करने में आसानी मिशन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एकल डिजिटल विंडो, आसान पंजीकरण, मानकीकृत प्रक्रिया और नियमित नीतिगत सुधार - जैसे अमानत राशि को ख़त्म करना और लेन-देन शुल्क को युक्तिसंगत बनाना ङ्क के जरिये जेम ने भागीदार बनने की बाधाओं को काफी हद तक कम किया है, जिससे सरकारी खरीद तक पहुंच आसान हो गयी है।

आत्मनिर्भर भारत

जेम ने आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उद्यमों को बढ़ावा देने के लक्ष्य को मजबूती से आगे बढ़ाया है। घरेलू निर्माताओं और सेवा प्रदाताओं को प्राथमिकता देकर, इसने स्थानीय मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत किया है और देशी उत्पादन को प्रोत्साहित किया है। पोर्टल पर दिया गया हर ऑर्डर भारत की निर्माण क्षमता और आर्थिक संप्रभुता में एक निवेश है। खास बात यह है कि जेम में मात्रा के आधार पर लगभग 60ल ऑर्डर और सकल माल मूल्य (जीएमवी) में 45ल से ज्यादा की हिस्सेदारी सूक्ष्म और लघु उद्यमों (एमएसई) की है।

समावेशी सरकारी खरीद

जेम, पीएम मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास' मिशन के अनुरूप समावेशी विकास का एक महत्वपूर्ण इंजन के रूप में सेवाएं देता है। यह स्टार्टअप्स, छोटे व्यवसायों और महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों को बिना किसी बाधा या मध्यस्थ के सरकारी खरीदारों के सामने अपने उत्पादों और सेवाओं को आसान तरीके से पेश करने का मौका देता है। प्रवेश करने की बाधाओं को खत्म करके और सरकारी खरीद तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाकर, जेम ने पूरे देश के छोटे व्यवसायों को राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय भागीदार बनने और उस व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए सशक्त बनाया है, जिस पर कभी स्थापित कंपनियों का दबदबा हुआ करता था। जेम के माध्यम से 12 लाख से अधिक सूक्ष्म और लघु उद्यमों ने 9 लाख करोड़ रुपये से अधिक के सरकारी ऑर्डर पूरे किए हैं। 2.20 लाख से ज्यादा महिला उद्यमियों ने 99,713 करोड़ रुपये से अधिक के ऑर्डर हासिल किए हैं, जबकि 42,000 से अधिक स्टार्टअप्स ने 65,600 करोड़ रुपये से अधिक के ऑर्डर पूरे किए हैं। जेम ने 69,000 से ज्यादा एससी/एसटी उद्यमियों को सरकारी खरीद में भाग लेने का अवसर दिया है, और उन्होंने 23,145 करोड़ रुपये से अधिक के ऑर्डर पूरे किए हैं।

विकास का उत्प्रेरक

ये उपलब्धियाँ इस बात की फिर से पुष्टि करती हैं कि जेम की भूमिका एक डिजिटल खरीद प्लेटफ़ॉर्म से कहीं ज़्यादा है। यह प्लेटफार्म समावेशी विकास, उद्यमिता और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उत्प्रेरक है, जो सुनिश्चित करता है कि हर योग्य उद्यम को भारत के विकास में योगदान देने का समान अवसर मिले। कई मायनों में, जेम की यात्रा 'विकसित भारत 2047' की आकांक्षाओं को दर्शाती है, जो प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन के अनुरूप है ङ्क एक ऐसा भारत जो पारदर्शी, समावेशी, नवोन्वेषी और डिजिटल रूप से संप्रभु हो। हम जेम के दूसरे दशक में प्रवेश कर रहे हैं, हमारा विज़न इसे एक स्मार्ट, हरित और विश्व-स्तरीय प्लेटफ़ॉर्म के रूप में विकसित करना है, जो नई तकनीकों का उपयोग करता है और साथ ही हितधारकों, खासकर हमारे नवोन्मेषियों, स्टार्टअप्स, छोटे कारोबार, महिलाएं, युवा और छोटे शहरों और वंचित वर्गों से आने वाले उद्यमियों की भागीदारी को बढ़ाता है । भारत के सबसे सफल डिजिटल सरकारी खरीद इकोसिस्टम्स में से एक के रूप में, जेम यह दिखाता है कि कैसे तकनीक, डेटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उपयोगकर्ता-केंद्रित डिज़ाइन सार्वजनिक खर्च में गति, दक्षता और पैसों की सही कीमत प्रदान कर सकते हैं। पिछले दो वित्त वर्षों में, इस प्लेटफ़ॉर्म का वार्षिक जीएमवी 5 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है, जिससे इसका कुल मूल्य लगभग 20 लाख करोड़ रुपये हो गया है। इसमें अब 10,644 उत्पाद श्रेणियां और 350 सेवा श्रेणियां शामिल हैं। चाहे वह जीवन रक्षक दवाइयाँ और टीके हों, जो अस्पतालों तक तेजी से पहुँच रहे हैं, रक्षा सामग्री और ड्रोन हों, जो कुशलता से पहुंचाए जा रहे हैं, उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण हों, जो कक्षाओं को बदल रहे हैं, या विश्वसनीय अवसंरचना हो, जो गांवों को सशक्त बना रही है - पारदर्शी और कुशल खरीद सार्वजनिक सेवाओं की उच्च गुणवत्ता और संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करती है। इस बदलाव के सच्चे लाभार्थी भारत के नागरिक हैं। आईआईटी दिल्ली के एक अध्ययन (जुलाई-अगस्त, 2026) में पाया गया कि जेम के माध्यम से खरीदारी से पिछले तीन वित्त वर्षों (वित्त वर्ष 2023-24 से 2025-26) में 86,571.69 करोड़ रुपये का आर्थिक लाभ हुआ, जिसमें कीमत और प्रक्रिया की दक्षता से हुई बचत शामिल है। इसी तरह, अध्ययन में जेम के 101 उत्पादों की तुलना फ्लिपकार्ट, अमेज़न, इंडियामार्ट जैसे प्लेटफार्मों पर उपलब्ध समान वस्तुओं से की गई। इसमें पता चला कि जेम की कीमतें 74.3ल वस्तुओं के सन्दर्भ में सस्ती थीं, जिससे लगभग 13.6ल की कुल बचत हुई। जेम पोर्टल भारत की आर्थिक वृद्धि और पीएम मोदी के विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण इंजन के रूप में कार्यरत है। यह समाज के वंचित वाले वर्गों को सशक्त बनाता और उनका उत्थान करता है तथा उद्यमिता को बढ़ावा देता है। साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि टैक्स देने वालों का पैसा प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों को कुशलतापूर्वक खरीदने में इस्तेमाल हो।

मंजूरियां वैध बनी रहेंगी

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का व्यावहारिक अर्थ है कि बिना पर्यावरण मंजूरी लिए शुरू की गईं परियोजनाओं को बाद में हरी झंडी देने का आम रास्ता बंद किया गया है, लेकिन अनेक गलियां खुली रखी गई हैँ। बिना पूर्व पर्यावरण मंजूरी के शुरू कर दी परियोजनाओं को बाद में हरी झंडी देने के लिए 2021 में जारी ऑफिस मेमोरेंडम को रद्द करने का सुप्रीम कोर्ट का फैसला ऊपर से केंद्र और कॉरपोरेट सेक्टर के लिए भले बड़ा झटका मालूम पड़े, लेकिन असल में न्यायालय ने बीच का रास्ता निकाला है। इससे सिर्फ यह होगा कि ऐसी परियोजनाओं को सामान्य आदेश के तहत पोस्ट फैक्टो मंजूरी नहीं मिलेगी, लेकिन केंद्र हर परियोजना को अलग आदेश के जरिए मंजूरी दे सकेगा। केंद्र ने 2021 में 2017 की अधिसूचना को निष्प्रभावी बनाने के लिए ऑफिस मेमोरेंडम जारी किया था। 2017 की अधिसूचना के तहत पोस्ट फैक्टो (परियोजना शुरू होने के बाद) मंजूरी पर रोक लगी हुई थी। अब कोर्ट ने फैसला दिया है कि 2021 के ऑफिस मेमोरेंडम के जरिए भविष्य में पोस्ट फैक्टो मंजूरियां नहीं दी जा सकेंगी, लेकिन अब तक दी जा चुकीं मंजूरियां वैध बनी रहेंगी। इस तरह लगभग 20,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं को पर्यावरण संरक्षण संबंधी शर्तों से मुक्त कर दिया है। भविष्य के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि सरकार चाहे तो वैधानिक अधिसूचना या माफी (एमनेस्टी) योजना के जरिए असाधारण मामलों में पोस्ट-फैक्टो मंजूरी दे सकेगी। कोर्ट कहा है कि असाधारण या सार्वजनिक हित में पोस्ट फैक्टो मंजूरी देना हो, तो पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम-1986 की धारा 3 के तहत विधिवत अधिसूचना/ संशोधन जारी करना अनिवार्य होगा। यानी इस माध्यम से मंजूरी का रास्ता खुला रखा गया है। तीन जजों की बेंच ने यह व्यवस्था भी दी कि सुप्रीम कोर्ट का संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत विशेष परिस्थितियों में पोस्ट-फैक्टो मंजूरी देने का असाधारण अधिकार सुरक्षित रहेगा। तो इस फैसले का व्यावहारिक अर्थ है कि बिना पर्यावरण मंजूरी लिए शुरू कर दी गई परियोजनाओं को बाद में हरी झंडी देने का आम रास्ता बंद किया गया है, लेकिन अनेक गलियां या पगडंडियां खुली रखी गई हैँ। 2021 के ऑफिस मेमोरेंडम को पर्यावरण संरक्षण पर कॉरपोरेट हितों को तहजीह देने के सरकारी नजरिए का उदाहरण माना गया था। इस नजरिए को आगे बढ़ने के लिए केंद्र के पास आगे भी पर्याप्त अवसर बने रहेंगे।

आलेख

दो हजार वर्ष प्राचीन षट्खण्डागम ग्रंथ श्री राम किंकर उपाध्याय पुस्तकालय को भेंट

डॉ. संगीता-मनोज जैन
एफ 237, फ्लोमिंगो, आकृति ईकोसिटी
बावड़ियाकलाँ, भोपाल
(मो) 98934 36910

तुलसी मानस प्रतिष्ठान, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित तुलसी जयंती समारोह-2026 के अवसर पर श्री राम किंकर उपाध्याय पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र को श्रमण संस्कृति के 50 से अधिक आधारभूत शास्त्रीय ग्रंथ भेंट किए गए। इन ग्रंथों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड़, आदिपुराण, उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण सहित प्राकृत, संस्कृत तथा अपभ्रंश भाषा में विरचित अनेक ग्रंथ शामिल हैं। सभी अमूल्य ग्रंथ सिंघई सतीशचन्द्र-केशरदेवी जैन जनकल्याण संस्थान, नैनागिरि की ओर से वरिष्ठ प्रशासक सुरेश जैन (आईएएस) एवं न्यायमूर्ति विमला जैन द्वारा प्रदान किए गए। इस समारोह में मंच पर श्रद्धेय दीदी मंदाकिनी राम किंकर, पूर्व राज्यपाल माननीय श्री कप्तान सिंह सोलंकी जी, पूर्व सांसद तथा प्रतिष्ठान के कार्याध्यक्ष माननीय श्री रघुनन्दन शर्मा, पूर्व सांसद तथा तुलसी मानस के यशस्वी संपादक श्री पी.डी. मिश्रा विराजमान थे। लगभग दो हजार वर्ष पुरानी भारतीय आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा का षट्खण्डागम आधारभूत ग्रंथ है। षट्खण्डागम जीवन का विज्ञान है। अतीत के बोध का दर्पण है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आद्य ग्रन्थ है। यह जीवन और जीविका के बीच प्रभावी संतुलन स्थापित करता है। यह हमारे दुगुर्णो को दूर कर हमें शक्ति संपन्न करता है। हमें नैतिक रूप से सशक्त करता है। अंत: षट्खण्डागम के सार को केवल मंदिर तक सीमित न रखकर अपने दैनिक व्यवहार में सम्मिलित और सम्मिश्रित करना तथा उसके मूल संदेश को अपने जीवन में उतार कर अपना भौतिक, आध्यात्मिक, मानसिक और भावनात्मक विकास करना आवश्यक है । यह परिस्थितियों का सुखद संयोग है कि आचार्य वीरसेन ने धवला टीका 08 अक्टूबर 816 को पूरी की और महाकवियत्री माता जी ने 1190 वर्षो के बाद 04 अप्रैल, 2007 को अपने दीक्षा दिवस पर सिद्धांत चिंतामणि टीका पूरी की। उनकी जन्म जयंती और संयम जयंती की शरदपूर्णिमा भारतीय संस्कृति की सौभाग्यजनक स्रोतस्विनी बनकर अमर हो गई है। परम पूज्य गणिनी ज्ञानमती माता जी की संस्कृत में सिद्धांत चिंतामणि और पूज्य चन्दनामती जी की आधुनिक हिन्दी में ज्ञान चिंतामणि टीकाओं ने षट्खण्डागम के रहस्य को प्रामाणिक रूप से विश्व के समक्ष उद्घाटित कर दिया है। दोनो विदुषी माताओं ने षट्खण्डागम के प्रत्येक सूत्र की विशद व्याख्या करते हुए उसमें गर्भित असीम अर्थ का अनावरण कर दिया है । परिणामत: षट्खण्डागम का आधुनिक विज्ञान से तकनीकी संवाद सहज और सरल हो गया है। भौतिकी और चेतना की अवधारणाओं के बीच तुलना करना आसान हो गया है। भौतिकशास्त्र के साथ चेतना का सम्मिलन और समन्वय संभव हो गया है। उनके अवदान से पूरा साहित्यिक जगत उपकृत है। संस्कृत साहित्य के विकास में ज्ञानमती जी का और हिन्दी तथा अंग्रेजी साहित्य के विकास में चन्दनामती जी के अनुपम योगदान की सर्वत्र सराहना की जा रही है। महावीर काल के गत 2500 वर्षो के इतिहास में किसी साध्वी युगल द्वारा सर्वप्रथम अभिलिखित संस्कृत में सिद्धांत चिंतामणि तथा हिन्दी में ज्ञान चिंतामणि का आज हम जयगान करते है। ब्राम्ही और सुंदरी की भांति वर्तमान जैन जगत की इन दोनों सुविज्ञ सुपुत्रियों और संयतिकाओं को हम शत-शत प्रणाम करते है। परम पूज्य ज्ञानमती जी की प्रेरणा से इस वर्ष षट्खण्डागम का द्विसहस्राब्दी समारोह राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा है और इस ग्रंथ पर आधुनिक संदर्भों में व्यापक शोध, अध्ययन और व्याख्या की जा रही है ताकि नई पीढ़ी भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ सके।

कभी-कभी एक शब्द भी गजब ढाता है

शंकर शरण

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने दिया था। उन के शब्दों ने हिटलर के सामने पस्त हो रहे इंग्लैंड को बल दिया। इस हद तक कि कई यूरोपीय देशों को टिके रह कर लड़ने का हौसला मिला।ज्. चर्चिल ने अंग्रेजी भाषा को बुलाया और उसे युद्धभूमि में उतार दिया। आज कम लोग याद करते हैं कि चर्चिल को 1953 में साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला था — इतिहास और साहित्यिक लेखन, तथा उदात्त मानवीय मूल्यों की रक्षा में अद्भुत वक्तृता के लिए।ज् कला के किसी अन्य माध्यम में इतने शक्ति-संचय और प्रभाव की संभावना नहीं है। देखें तो एक शब्द — 'कॉकरोच' — ने निवर्तमान शिक्षा मंत्री के पद की बलि ले ली। चाहे इस से उन का संबंध नहीं था। पर सामाजिक क्षेत्र में प्रयोग होकर वह शब्द तीखा बन गया था। उस का जन्म हिकारत और घमंड की भावना से हुआ था। इसलिए 'पार्टी' रूप में शरीर पाकर एक कोरे शब्द ने शक्ति रूप धारण कर लिया। वह बलि माँगने लगा, और परिस्थितिवश उस के सामने शिक्षा मंत्री पड़ गये! फिर उस ने कुछ ही दिनों में उन्हें अपदस्थ कर डाला। उस सरकार को हिला दिया जिसे बारह साल से कोई दल या नेता झुकाने में विफल रहा था। पर चार दिन पहले बनी कॉकरोच जनता पार्टी, जो कहीं औपचारिक दर्ज भी नहीं, ने सीधी झड़प में उसे झुकाया। यदि 'कॉकरोच' शब्द उस सामाजिक अर्थ में उच्चरित होकर अवतरित न हुआ होता, तो क्या भारतीय राजनीति में वह होता जो गत सप्ताह हुआ? कॉकरोच पार्टी बनाने से पहले अभिजीत दीपके एक साधारण छात्र था। वह वही बना रहता, यदि सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस ने 15 मई 2026 को इस शब्द का वैसा प्रयोग न किया होता। जिस का समाचार हजारों मील दूर दीपके ने सुनकर अपना क्षोभ व्यक्त करने के लिए उस नाम से एक व्यंग्यात्मक पार्टी बनाई। महज शाब्दिक! जैसे कॉकरोच नाम भर था, वैसे ही कॉकरोच पार्टी भी। एक एक्स (ट्विटर) मंच, जहाँ उस ने वैसे 'कॉकरोचों' को इकट्ठा होने की अपील की। ऐसी गतिविधि सोशल मीडिया पर हजारों लोग करते रहते हैं। दुनिया भर में बड़े-बड़े सितारे, नेता, लेखक, पत्रकार ट्विटर पर कुछ न कुछ लिखते बोलते हैं और उन के लाखों फॉलोअर उसे लाइक करते हैं। उस से कुछ नहीं होता। पर इस सामाजिक शब्द, 'कॉकरोच', का जिस रूप में जन्म हुआ उस में तीखा अर्थ भरा हुआ था। चीफ जस्टिस ने 15 मई को अपनी अदालत में किंचित वितृष्णा से कहा, कुछ युवक कॉकरोच की तरह होते हैं, जिन्हें कोई रोजगार नहीं मिलता और किसी भी पेशे में उनके लिए कोई स्थान नहीं होता। उनमें से कुछ मीडिया में चले जाते हैं, कुछ आरटीआई कार्यकर्ता बन जाते हैं, और फिर वे हर किसी पर हमला करना शुरू कर देते हैं। उन की बात में सत्य का अंश था। कुछ लोग किसी बड़े व्यक्ति या संस्था को निशाना बनाकर सफल होने की तिकड़म करते ही रहते हैं। सुप्रीम कोर्ट में पीआईएल दायर करना इस का एक साधन रहा है। परन्तु जिस तरह चीफ जस्टिस ने हल्के से वैसे लोगों को 'बेरोजगार युवक' कह दिया, वह बात एक तिक्त युवा समूह पर जाकर बैठ गई। यानी, उन भरे बैठे बेरोजगार युवकों पर जो कई तरह से योग्य होते हुए भी शासकों के भ्रष्टाचार, जातिवाद, आरक्षण, दलबंदी, स्थान की कमी, कुशिक्षा, आदि कारणों से बेकारी, और फलत: उपेक्षा व कष्ट झेलते हैं। सो चीफ जस्टिस के उस शब्द की बराबर और विपरीत प्रतिक्रिया हुई। दूसरे दिन,16 मई को, दीपके ने उस शब्द से 'कॉकरोच जनता पार्टी' नाम से एक ट्विटर हैंडल बनाया। एक ही दिन में उस के उनतीस हजार फॉलोअर बन गये। चार दिन में उन की संख्या दो लाख हो गई। पाँचवें दिन सत्ताधारियों के दबाव से ट्विटर ने भारत में उस हैंडल को हटा दिया। छठे दिन, 22 मई को दीपके ने 'कॉकरोच इज बैक' नाम से नया हैंडल बनाकर 'कॉकरोचों' द्वारा शिक्षा मंत्री का इस्तीफा माँगने का अभियान आरंभ किया, क्योंकि कई परीक्षाओं के पर्चे लीक होने से देश भर के छात्रों को बार-बार परेशानी हो रही थी। इस अनायास आह्वान ने देश के युवाओं के क्षोभ को एक रास्ता और स्वर दे दिया। जो सत्ताधारियों की लापरवाही और गैर-जबावदेही से दु:खी थे। उस दु:ख को 'कॉकरोच' बिल्ले के क्षोभ ने एक नैतिक धार दे दी। एक तो, उन्हें देश के सत्ताधारी वितृष्णा से देखते हैं — आखिर न्यायाधीश सरकार का तीसरा अंग हैं। दूसरे, पर्चे लीक एवं शैक्षिक तंत्र की लापरवाहियों के लिए कोई जिम्मेदार नहीं! प्रधानमंत्री आए-दिन कुछ कुछ बोलते रहते हैं, पर लाखों छात्रों के साथ हो रहे अन्याय पर चुप बने रहे हैं। फलत: यह दोहरा आक्रोश जुड़ कर दीपके द्वारा 22 मई को एक ठोस माँग में परिणत हुआ। फिर उस ने 6 जून को जंतर-मंतर पर शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के लिए धरना शुरू किया। उस में जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक भी आ जुड़े। फिर उन के समर्थन में बड़े लोग बयान देने लगे। इस प्रकार, शिक्षा तंत्र में लापरवाही की जिम्मेदारी के लिए मंत्री के इस्तीफे की माँग एक भौतिक शक्ति बन गई। उस ने अन्य शक्तियों को भी आकर्षित किया। इस तरह, 15 मई को 'कॉकरोच' शब्द के जन्म लेने, अगले दिन उस की प्रतिक्रिया में ट्विटर पर 'कॉकरोच पार्टी' बनने, वहीं 22 मई को 'कॉकरोच' द्वारा शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की माँग का आरंभ, फिर 6 जून से जंतर-मंतर धरना, और अंतत: 25 जुलाई को शिक्षा मंत्री का इस्तीफा — यह सब मूलत: उस एक शब्द के उच्चारण से बनी गति है। चीफ जस्टिस का कहा एक शब्द अनजाने पूरी सरकार पर भारी पड़ गया। यदि वह शब्द उस रूप में उच्चरित और अवतरित न हुआ होता, तो गत दो महीने की घटनाएं शायद ही घटी होती। यह संयोग भी था। परन्तु एक शब्द की शक्ति भी, जो कभी-कभी कैसा रूप दिखा सकती है!

इस से पहले भारतीय राजनीति में एक शब्द का प्रभाव छब्बीस वर्ष पहले देखा गया था। जब भाजपा के उभरते नेता गोविंदाचार्य ने 1997 में अपने सर्वोच्च नेता वाजपेई के लिए 'मुखौटा' शब्द का प्रयोग किया था। यद्यपि उन्होंने कहा कि उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा था। पर स्वयं भाजपा के बड़ों द्वारा उसे सत्य मानने से बात जमी रह गई। तब के हालात में वह शब्द सही लगता भी था। पर जल्द ही गोविंदाचार्य को भुगतना पड़ा। उन का राजनीतिक कैरियर ही खत्म हो गया। पहले उन्हें किनारे किया गया। फिर पार्टी में उन की कोई जगह न बन सकी। वरना, वे एक स्टार नेता थे। उन का व्यक्तित्व, वक्तृता, जाति, पार्टी, आयु, सब कुछ संभावनाओं से भरा था। पर उस एक शब्द प्रयोग ने उन को ग्रहण लगा दिया।सो, कभी-कभी एक शब्द भी गजब ढाता है! यह भाषा की रहस्यमय शक्ति है। यद्यपि वह अपने आप में दुर्बल है। जो चाहे इस का दुरुपयोग कर लेता है!

भारत में कॉकरोचों का ज्वालामुखी फूट पड़ा

हरिशंकर व्यास

नरेंद्र मोदी को समय विशेष ने भारत का प्रधानमंत्री बनाया था। अब समय ही जुलाई 2026 में बता रहा है कि उनकी एक्सपायरी के साथ संघ परिवार और हिंदू राजनीति का भी तिया-पांचा नत्थी है! कैसे? बुनियादी बात यह है कि मोदी राज ने हिंदुओं के चाल, चेहरे और चरित्र का वह खुलासा देश (अर्थात भारत की मिलेनियल, जेन-ज़ेड और अल्फा पीढ़ी) तथा दुनिया (अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन से लेकर आसियान और पड़ोसी देशों तक) के सामने ला दिया है। इसका लब्बोलुआब है कि उसकी 'चाल' देश को पराश्रित और बिकाऊ बाजार बनाने की है, उसका 'चेहरा' मनुष्य को कॉकरोच मानने वाला है और उसका 'चरित्र' नैतिकताविहीन भय, भूख और भक्ति पर टिका है। तभी हिंदुओं की मौजूदा युवा पीढ़ी और अगली पीढ़ी के बीच कथित चाल, चेहरा और चरित्र मजाक, मखौल और घृणा का विषय है।

जरा मई 2025 के ऑपरेशन सिंदूर से जुलाई 2026 तक की घटनाओं पर गौर करें। क्या एक भी ऐसी घटना हुई, जिससे प्रधानमंत्री मोदी और उनकी सरकार की जैविक वाहवाही हुई? सरकार ने शक्ति और जीत का जैसा जो नैरेटिव बनाया, उस पर देश-दुनिया की प्रतिक्रिया क्या थी? मोदी-शाह भले इस गलतफहमी में रहे हों कि भक्त झूम रहे हैं। 2024 के आम चुनाव में अप्रत्याशित झटके के बाद उन्होंने हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, असम जीत लिए। भक्तों ने नगाड़ा भी बजाया। पर जितना बजाया, उससे अधिक साख बिगड़ी। हिंदू राजनीति का चाल, चेहरा और चरित्र लुढ़का। सोचें, ऑपरेशन सिंदूर के बाद विश्व राजनीति में भारत का जलवा बना या पाकिस्तान का? वैसे ही भारत में मोदी, भाजपा और संघ की हर जीत, चुनाव आयोग, संसदीय कार्यवाही, सुप्रीम कोर्ट आदि हर संस्था की साख का भट्ठा बैठाने वाली थी। क्या है चुनाव आयोग की अब साख? भारत के चीफ जस्टिस ने 15 मई 2026 को एक ही तो शब्द बोला था। पर भारत में कॉकरोचों का ज्वालामुखी फूट पड़ा। यह ज्वालामुखी न शांत होना है और न खत्म। पहली बात, 35 वर्ष से नीचे की उम्र के नौजवानों की संख्या कुल आबादी में आज कोई 65 प्रतिशत है। इसमें भी 15 से 29 वर्ष की पीढ़ी (जनरेशन-ज़ेड) कोई 37 करोड़ है। इसी में फिर आगे जुड़ने वाले 15 साल से कम उम्र के बच्चों की करोड़ों की वह संख्या है जो 2029 और 2034 के आम चुनावों में वोट देगी। ये स्कूली बच्चे भी कॉकरोच आंदोलन की हवा के मीम्स की अफीम का मजा लेते हुए है। क्या इन्हें नरेंद्र मोदी अपनी रील्स बनाकर नौकरियों की हवा बनाएगे? अच्छे दिन, पैसा बांटने, नौकरियों के प्रमाणपत्रों की झांकियों, राष्ट्रवाद और भक्तिवाद से नई और भावी पीढ़ी में जितने भ्रम बनाए थे, उनकी पूर्ति मोदी रील्स से कतई पूरी नहीं होगी? सो, मोदी-शाह और संघ ने जो कांटे बोए, जितनी तरह के झूठ बोले, उन्हीं से घर-घर ठगी का रोना है। मोदी का चेहरा अकेला सरकार, संघ परिवार की पूंजी था। मोदी ने स्वयं घर-घर मोदी, हर-हर मोदी बनाया था। वही चेहरा चेहरा अब नौजवानों का मीम है, गुस्से और गालियों का केंद्र है। मजाक, मखौल और गालियों की खान बना हैं। दूसरा कोई भी चेहरा भाजपा और संघ और स्वंय मोदी के पास नहीं है, जिसे आगे कर जिसकी सच्चाई, जिसके प्रति विश्वास से युवाओं के गले बात उतारी जा सके। न ही सरकार की किसी संस्था की धमक है और न मान। कॉकरोच भीड़ की निगाह में मोदी सरकार की हर संस्था, लोकतंत्र का खंभा अब भरोसा लायक नहीं है। सोचें, कॉकरोच, सोनम वांगचुक और अभिजीत दीपके पर। कल तक अनाम और जीरो। अचानक नौजवानों के दिल-दिमाग पर छाए, इनके बहाने ज्वालामुखी फूटा। पर बेचारे वांगचुक ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के हाथ से जूस पीया नहीं कि नौजवानों ने उनसे नाता तोड़ डाला। भाजपाई चेहरे जैसे अछूत हों! फिर संसद बैठी, तो लोकसभा में राहुल गांधी के भाषण के दौरान स्पीकर पद पर बैठे ओम बिरला का चेहरा देखा तो कॉकरोच के साथ घर-घर सोचा यह कैसा स्पीकर है। सो, मां भारती के नाम पर संघ परिवार और भाजपाई हिंदू संस्कृति का हवाला देते हुए बुजुर्गों के सम्मान, प्रधानमंत्री की गरिमा के नाम पर नरेंद्र मोदी के मखौल को कितना ही असंस्कारी घोषित करें, लेकिन यह नया असंस्कारी भारत मोदी, संघ परिवार की ही बदौलत है। मां भारती के नाम पर झूठ बोलकर धोखा देने, राजनीति को अनैतिकताओं का कोठा बनाने, नेताओं को खरीदने-बेचने, डराने-धमकाने, किसी को पप्पू बताने, किसी को देशद्रोही, खालिस्तानी या टुकड़े-टुकड़े गैंग घोषित कर देने की नंगई ने ही युवाओं, बच्चों को जैसे को तैसी भाषा दी है। कल तक सोशल मीडिया, टीवी चैनल मोदी की ताकत है। वही सोशल मीडिया अब उनका पानीपत मैदान है। हिंदुओं की त्रासदी और मोदी व हिंदू राजनीति की एक्सपायरी है।

बड़े बाबा मंदिर में प्रवेश करते ही नंदीश्वर जिनालय का होता है दिव्य अनुभव : निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर महाराज जी

कुण्डलपुर (दमोह) (विश्व परिवार)। सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में चतुर्दशी के पावन अवसर पर बड़े बाबा आदिनाथ भगवान के अभिषेक एवं शांतिधारा का आयोजन अत्यंत श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुआ। देशभर से आए हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में निर्यापक श्रमण मुनि श्री समता सागर जी महाराज ने बड़े बाबा की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि 'कुण्डलपुर के बड़े बाबा के इस भव्य मंदिर में जैसे ही प्रवेश करते हैं, साक्षात ऐसा अनुभव होने लगता है मानो अकृत्रिम नंदीश्वर जिनालय में प्रवेश कर रहे हों।' आज की शांतिधारा का वाचन मुनि श्री पवित्रसागर महाराज ने किया।

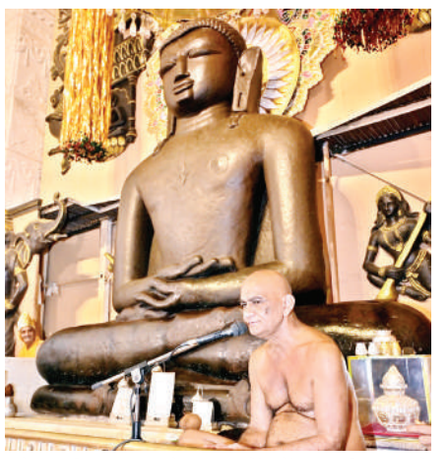

धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि जैन आगमों में वर्णित नंदीश्वर द्वीप के जिनालय अकृत्रिम एवं दिव्य हैं। वर्तमान पंचमकाल में वहाँ मनुष्य या विद्याधर भी नहीं पहुँच सकते। वहाँ केवल चतुर्निकाय के इन्द्रादि देव एवं देवियाँ ही अष्टान्हिका महापर्व सहित अन्य शुभ अवसरों पर दिव्य अभिषेक, पूजन और आराधना करते हैं। शास्त्रों में उनके दिव्य स्वरूप का वर्णन मिलता है तथा आचार्य और मुनिराज अपने प्रवचनों में उनकी अलौकिक महिमा का भावपूर्ण वर्णन करते हैं। श्रद्धालु उन दिव्य जिनालयों की केवल कल्पना कर आत्मिक आनंद का अनुभव करते हैं।

उन्होंने कहा कि अकृत्रिम जिनालयों में विराजमान सभी जिनप्रतिमाएँ पद्मासन मुद्रा में होती हैं। यद्यपि इस काल में वहाँ प्रत्यक्ष जाना संभव नहीं है, लेकिन कुण्डलपुर स्थित बड़े बाबा का भव्य मंदिर उसी दिव्यता का सजीव अनुभव कराता है। मंदिर का आध्यात्मिक वातावरण, विशालता, शांतिमय आभा और बड़े बाबा की अलौकिक प्रतिमा श्रद्धालुओं के अंतर्मन को ऐसी अनुभूति प्रदान करती है कि मानो वे स्वयं नंदीश्वर जिनालय में उपस्थित होकर भगवान की वंदना कर रहे हों।

मुनिश्री ने कहा कि बड़े बाबा की महिमा और प्रभाव ही है कि देश के कोने-कोने से श्रद्धालु बार-बार यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। भगवान के अभिषेक, शांतिधारा, पूजन एवं वंदना के माध्यम से वे पुण्य का अर्जन करते हैं, अशुभ कर्मों का क्षय करते हैं, संसार के बंधनों को सीमित करते हुए मोक्षमार्ग की ओर अपने कदम बढ़ाते हैं। तीर्थराज कुण्डलपुर केवल दर्शन का स्थान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, श्रद्धा, समता और आध्यात्मिक जागरण का दिव्य केंद्र है।

उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को धर्ममय जीवन अपनाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि जीवन की वास्तविक समृद्धि धर्म से आती है। यदि व्यक्ति धर्म से जुड़ता है तो उसके जीवन में मानसिक शांति, पारिवारिक सौहार्द, सामाजिक प्रतिष्ठा और आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ धन-धान्य की भी कमी नहीं रहती। धर्म मनुष्य को केवल मोक्षमार्ग की ओर ही नहीं ले जाता, बल्कि वर्तमान जीवन को भी सुख, संतोष और समृद्धि से भर देता है।

मुनिश्री ने कहा कि बड़े बाबा की भक्ति का प्रत्येक क्षण आत्मकल्याण का अवसर है। तीर्थों की यात्रा तभी सार्थक होती है जब वहाँ प्राप्त आध्यात्मिक प्रेरणा को अपने जीवन में उतारा जाए। श्रद्धा, विनम्रता और सम्यक भाव से की गई आराधना ही जीवन को सफल बनाती है।

इस अवसर पर अविनाश जैन 'विद्यावाणी' एवं प्रचारमंत्री जयकुमार जैन 'जलज' ने बताया कि सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में इन दिनों संपूर्ण भारतवर्ष से हजारों श्रद्धालु बड़े बाबा के दर्शन, अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन के लिए पहुँच रहे हैं। प्रात:काल से ही मंदिर परिसर में भक्तों की लंबी कतारें लगी रहती हैं। श्रद्धालु बड़े बाबा के चरणों में नमन कर पुण्य लाभ अर्जित कर रहे हैं तथा तीर्थराज कुण्डलपुर की आध्यात्मिक गरिमा का दिव्य अनुभव प्राप्त कर रहे हैं।

अच्छे-संस्कार संतान के लिए उपहार के समान होते हैं : पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के परम भक्त वैभव जैन बड़ामलहरा जी ने अवगत कराया की दिगम्बर जैन श्रमण-संस्कृति के उन्नायक पट्टाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी गुरुदेव ने धर्मसभा में सम्बोधन करते हुए कहा था -

आत्मिक सुख ही सर्व-श्रेष्ठ

ब्रह्माण्ड में सबसे अधिक श्रेष्ठ कोई सुख है, तो वह मानसिक-सुख, आत्मिक सुख है। आत्तमक सुख शाश्वत, निरन्तर होता है। आत्म-सुख उ ही वास्तविक सुख होता है। आत्म-सुख के लिए अन्य, बाह्य- साधनों की आवश्यकता नहीं होती है। सामग्रियों में सुख नहीं होता है, यदि साधनों में सुख होता तो सभी धनपति सुखी हो जाते।

भोगों में शान्ति नहीं, योग में शान्ति भी है, सुख भी है और शाश्वत आनन्द भी है। साधन शून्य साधना ही सुखकारी होती है।

इन्द्रिय-सुख क्षणिक

पाँच इन्द्रियों होती हैं। स्पर्शन, रसना (जिह्वा) घ्राण (नाक), चक्षु (नेत्र), कर्ण (कान), इन पांच इन्द्रयों के भोगों की लालसा में व्यक्ति संसार में भयंकर कष्टों को प्राप्त हो रहा है। इन्द्रिय- सुख विनाशीक हैं, क्षणिक हैं, नश्वर हैं। इन्द्रिय-सुख वास्तव में सुख नहीं अपितु सुखाभास हैं। अंगुल की काम इंद्रिय और चार अंगुल की भोग (रसना) इंद्रिय हैं। चार के वश इंसान हैवान बन रहा है।

इन्द्रय-सुखों के साधन जुटाने में श्रम ,इन्द्रिय सुखों को भोगने में पागलपन , वियोग पर पीड़ा, मानसिक-शारीरिक पीड़ा। इन्द्रिय-सुखों को भोगने की चाह में पीड़ा, भोगते हुए कष्ट भोगने के उपरान्त पश्चाताप । भोग भोगने से कभी संतुष्टी नहीं मिलती, अपितु चाह, कामनाएँ वर्धमान होती हैं।

भक्ति की सुगंध से देवों का आगमन

गुरु भक्ति, प्रभु भक्ति से स्वर्ग सुख तो मिलता ही है, साथ-ही-साथ शाश्वत-सुख-शांति स्वरूप निर्वाण सिद्धि भी परंपरा से मिलती है। 'भक्ति मुक्ति दातार, भक्ति मुक्ति दातार'।

जहाँ पुष्पों की सुगंध होती है, वहाँ भौरे स्वयमेव ही आने लगते हैं। ऐसे ही जहाँ सच्चे-गुरुओं के दिव्य-उपदेश होते हैं, वहाँ भक्त स्वयमेव पहुंच जाते हैं। जहाँ देवाधिदेव जिन देव की भक्ति होती है, वहाँ स्वर्ग के देव भी आ जाते हैं। मिश्री की सुगंध से चींटियाँ स्वयं आने लगती हैं ऐसे ही जहाँ धरती के चेतन्य-देवता गुरु भगवन्त होते हैं, वहाँ कल्याण- इच्सुक भव्य-जीव स्वयं पहुँच जाता है।

अच्छे-संस्कार संतान के लिए उपहार के समान होते हैं। अच्छे-संस्कार ही संतान को श्रेष्ठ, योग्य, विनयवंत, विवेकी, यशवंत, समृद्ध एवं सफल बनाते हैं।

जोन 10 में वसूली बकायादारो व व्यावसायिक परिसरो को ताला लगाकर सीलबंद की कार्यवाही की

रायपुर (विश्व परिवार)। जोन क्रमांक 10 के अंतर्गत् आयुक्त, अपर आयुक्त, उपायुक्त, जोन आयुक्त के निर्देशानुसार आज दिनांक 11.08.2026 को कई वर्षों से बकाया राशि जमा नहीं करने वाले बड़े बकायादारों को डिमांड बिल, डिमांड नोटिस जारी करने के उपरांत भी आज दिनांक तक संपत्तिकर (टैक्स) जोन कार्यालय में जमा नहीं करने के कारण शक्ति से कार्यवाही करते हुए व्यावसायिक परिसरो को ताला लगाकर सीलबंद की कार्यवाही की गई।

जोन क्रमांक 10 वार्ड क्रमांक 53 स्थित बाबू जगजीवन राम स्थित फ्लोरल सिटी के क्लब हाउस, जिसका GIS ID RPR652R00042 है, पर वर्ष 2018-19 से बकाया राशि कुल 26,46,256/- रुपए देय थी। उक्त बकाया राशि का भुगतान निर्धारित अवधि में नहीं किए जाने के कारण आज दिनांक 11 अगस्त 2026 को संबंधित क्लब हाउस में सीलबंदी की कार्यवाही की गई।

अंचल में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा हरेली पर्व, कृषि औजारों की होगी पूजा

- गेड़ी दौड़ और पारंपरिक व्यंजनों से गूंजेंगे गांव

आरंग (विश्व परिवार)। आज छत्तीसगढ़ का प्रमुख कृषि पर्व 'हरेली' प्रदेश भर में हर्षोल्लास से मनाया जाएगा। सावन माह की अमावस्या को पड़ने वाला यह त्योहार किसानों के लिए नए कृषि वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन घर-घर में खेती के औजारों की पूजा होती है और गांवों में गेड़ी दौड़ का आयोजन किया जाएगा।हरेली के दिन सुबह से ही किसान अपने हल, कुदाल, गैंती और ट्रैक्टर को साफसफाई कर गोबर-मिट्टी से लीपेंगे। इसके बाद फूल, माला, धूप और दीप से पूजा कर अच्छी फसल की कामना की जाएगी। पूजा के बाद बैलों को नहलाकर सींगों में रंग रोगन किया जाता है।इस पर्व का सबसे खास आकर्षण 'गेड़ी' है। बच्चे बांस की गेड़ी बनाकर दौड़ लगाएंगे। ग्रामीण

क्षेत्रों में कबड्डी, कुश्ती, फुगड़ी जैसे अन्य पारंपरिक खेलों का आयोजन भी होंगे। घरों में चीला, खुरमी और ठेठरी जैसे पकवान बनेंगे। महिलाएं घर के द्वार पर नीम की डाली बांधेंगी जिसे 'हरेली डार' कहा जाता हैं। इससे घर की नकारात्मक शक्तियों से रक्षा के लिए शुभ माना जाता है।

कृषि विभाग और पंचायतों द्वारा इस दिन वृक्षारोपण कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं। हरेली केवल खेती का त्योहार नहीं, बल्कि प्रकृति और समाज से जुड़ाव का पर्व भी है।किसान भाईचारे और समृद्धि की कामना के साथ आज पूरे अंचल में हरेली का पर्व बड़े बड़े और धूम-धाम से मनाएंगे।

संस्कार से पूर्ण जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है: आमोद श्रीवास्तव

लखनऊ (विश्व परिवार)। प्रबुद्ध जन पत्रकार परिषद के तत्वाधान में संयोजक संयोजक आमोद श्रीवास्तव ने कहा कि संस्कार से पूर्ण जीवन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। जिसके लिए उन्होंने कुछ बात का द से शुरूआत की। पहले द जो है दमन अपने मन को दमन करना चाहिए। दूसरे द से दान करिए और तीसरे दान से अपनी कमाई का एक हिस्सा समाज के हित के लिए उपयोग में लगायें। कार्यक्रम का एक शाम बच्चों के नाम गोष्ठी आयोजन लखनऊ प्रेस क्लब के सभागार में आयोजित हुआ। जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कवि उमेश चंद दुबे एवं मुख्य अतिथि हिमांशु सक्सेना, अर्श, ने की। मुख्य अतिथि हिमांशु सक्सेना, अर्श ,ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज की शिक्षा पर परिमार्जन की आवश्यकता है , उसको निरंतर प्रयास

किया जाना चाहिए। उन्होंने अपने काव्य पाठ में उसका उल्लेख भी किया और समाज को जागरूक किया, तथा अनन्या के जन्मदिवस उत्सव पर अपने आशीष वचन कविता के माध्यम से प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कवि उमेश चंद दुबे ने आज की शिक्षा को परिमार्जन की आवश्यकता बारे में बताया कि हमारे समाज के बच्चों में स्वावलंबन, देशप्रेम और नैतिकता के बारे जरूर समझाना होगा और उसके लिए हमेशा समाजिक एवं शिक्षा के। संगठनों को सक्रिय होना होगा और एक -दुसरे का सहयोग जरूरी है।

अनाचार धर्म से रोकता है, संयम मोक्ष का द्वार खोलता है: मुनिश्री संवेगरत्न सागर म.सा.

रायपुर (विश्व परिवार)। विवेकानंद नगर स्थित ज्ञानवल्लभ उपाश्रय में जारी सर्वमंगलमय वर्षावास में प्रतिदिन श्रावक-श्राविकाएं मुनि भगवंतों से जिनवाणी का श्रवण कर आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। मंगलवार को धर्मसभा में मुनिश्री संवेगरत्न सागर जी म.सा. ने संयम, सदाचार को जीवन मे अपनाने और अनाचार के त्याग का महत्व बताते हुए कहा कि संयम मार्ग से यदि अस्थिर हुए तो मोक्ष मार्ग से विमुख हो जाओगे। मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग संयम से ही होकर जाता है।

मुनिश्री ने कहा कि नरक आदि दुर्गति का प्रधान कारण संसारवास है। संसार में परिवार और सांसारिक उलझनों के बीच फंसकर धर्म का पालन कठिन हो जाता है। अनाचार व्यक्ति को धर्म करने नहीं देता और अधर्म छोड़ने नहीं देता। इसलिए आत्मकल्याण के लिए अनाचार से ऊपर उठकर सदाचार के मार्ग पर आना जरूरी है।

मुनिश्री ने कहा कि गृहवास में अनेक संकल्प-विकल्प के बीच जीव का जीवन उलझा रहता है। गृहवास में क्लेश और विलंबना बनी रहती है। जीव काम, भोग और विभिन्न वासनाओं में लिप्त होकर कर्म बंध करता है। ऐसे में कर्म निर्जरा का मार्ग बाधित होता है। यदि जीव को सदाचार में प्रवेश करना है तो सबसे पहले अनाचार का त्याग करना होगा

मुनिश्री ने कहा कि आयुष्य पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। जीवन में आचार के पक्ष में दृढ़ होना ही सदाचार का मार्ग है। जब भयंकर पापकर्म का उदय होता है, तब जीव अनाचार की ओर आकर्षित होता है। ऐसे में अनाचार के सेवन का प्रायश्चित आवश्यक है। प्रायश्चित के अभाव में दुख, दुर्गति और पीड़ा का सृजन होता है।

मुनिश्री ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अनाचार को विराम देकर आचार में स्थिर होना चाहिए। धर्मी बनना है तो अनाचार का त्याग करना ही होगा। आचार ही प्रथम धर्म है और अनाचार का त्याग किए बिना धर्म संभव नहीं है।

माँ कामाख्या धर्मादा ट्रस्ट के द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। सावन माह के पवित्र महीने में में सुंदर नगर रायपुर में उर्वशी पांडे के निवास स्थान पर शिव मंदिर में सुंदरकांड का पाठ और भजन किया गया, काफी संख्या में लोग उपस्थित हुए । इस कार्य में श्रीमती कल्पना शुक्ला (जिलाध्यक्ष) श्रीमती मनोरमा बाजपेई (सुंदर नगर प्रभारी),श्रीमती उषा पांडे (अनुशासन प्रभारी), श्रीमती संध्या तिवारी (कुंज बिहारी चौक प्रभारी), मंजू मिश्रा ,सरोज शुक्ला, नमिता पात्रा , प्रियंका शर्मा, रजनी सोनी , कृष्णा शर्मा,अंजनी महिला मंडल की सभी बहने और ट्रस्ट से सहयोगी बहने उपस्थित रही। ट्रस्टी अध्यक्ष परम पूज्य गुरुदेव श्री संकर्षण शरण जी (गुरुजी) ने इस पवित्र कार्य के लिए सबको साधुवाद दिए।

विधोदय तीर्थ में आचार्य संघ कि तप त्याग संयम की सधना चल रही है

भोपाल (विश्व परिवार)। महाराज की सा संघ तप त्याग संयम की साधना अनवरत जारी हे, हो रही बारिश के बीच भक्तों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई, सुबह 5 बजे से ही प्रभु आदिनाथ के दर्शन के साथ साधना शुरू हो गुरु वंदना जिन आराधना तत्व चर्चा पठन पाठन के साथ आचार्य भक्ति,, आचार्य श्री द्वारा ब्रह्मचारी भइया को तत्वार्थ सूत्र की व्याख्या समझाई, रत्नकरंडक श्रावकाचार समय सार ग्रंथ की व्याख्या का वाचन कर आचार्य श्री ने कहा मन पर पूरी तरह अंकुश लगा लिया तो जीवन शांत परिणाम निर्मल रहेगे, मन की मान का चलोगे, मन की इच्छाएं पूरी करोगे तो संसार चक्र में उलझते रहोगे, उन्होंने समझाकर कहा जैसे जल के ऊपर मठमेला पन रहता हे, मिट्टी जमी रहती हे , तो

चेहरे का प्रतिबिंब पानी में नहीं दिखता, पानी निर्मल स्थिर शांत रहता हे, तभी छवि दिखाई देगी, उसी प्रकार मन में राग द्वेष की तरंगें उठती रहगी,, तो आत्म तत्व का दर्शन नहीं होगा, आचार्य श्री ने कहा संसारी प्राणी सभी जगह उलझ कर संसार के प्रत्येक पदार्थ को जानने में लगा हे, जबकि बहुत से पदार्थों में एक पदार्थ को भी पूरी तरह नहीं जान पा रहा, जबकि सभी पदार्थो को गौण कर प्रभु की आराधना सच्ची आराधना हे, जगत की क्रियाओं से मुक्त होकर, सभी संकल्प विकल्पों से रहित होकर मन को मन में एकाग्र करे ये ही सच्ची साधना है, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया आचार्य विद्या सागर महाराज के गुणों की वदना में शाहपुरा समाज ने अरघ अर्पित किए, अध्यक्ष पंकज सुपारी मनोज बांगा निर्वाण संयोजक राकेश ओ एस डी कलश स्थापना पुण्यर्जक देवेंद्र रुचि पदम जैन घर मनीष राजेश कोयला परिवार ऋषभ मनीष प्रगति परिवार के साथ शाहपुरा जिनालय के दीप जैन सचिव अमित मोदी जयदीप दिवाकर शामिल थे।

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, शंकर नगर, रायपुर में पर्यावरण संरक्षण, हरित परिसर के विकास एवं भावी शिक्षकों में पर्यावरणीय चेतना के प्रसार के उद्देश्य से वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती शेफाली मिश्रा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में विभिन्न फलदार एवं छायादार पौधों का रोपण किया गया। प्राचार्य श्रीमती शेफाली मिश्रा सहित प्राध्यापकगण, अधिकारी, कर्मचारी तथा एम.एड. एवं बी.एड. प्रशिक्षार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

इस अवसर पर प्रशिक्षार्थियों को वृक्षों के पर्यावरणीय, सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी महत्व की जानकारी देते हुए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल के लिए प्रेरित किया गया। प्राचार्य श्रीमती शेफाली मिश्रा ने कहा कि 'वृक्षारोपण केवल पौधा लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि लगाए गए पौधे का संरक्षण एवं संवर्धन करना हमारी वास्तविक जिम्मेदारी है।' उन्होंने भावी शिक्षकों से समाज में पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता का संदेश प्रसारित करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में 'हरित परिसर-स्वस्थ जीवन' एवं 'वृक्ष लगाएँ, पर्यावरण बचाएँ' का संदेश देते हुए महाविद्यालय परिवार ने पर्यावरण संरक्षण तथा रोपित पौधों की देखभाल का सामूहिक संकल्प लिया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापकगण श्रीमती अनुपमा अंबष्ट, डॉ. सीमा अग्रवाल, श्रीमती सपना शुक्ला, श्रीमती पूनम साहु, डॉ. लता मिश्रा, श्रीमती किरणजोत बदेशा, श्रीमती मंजूषा तिवारी, डॉ. स्वीटी चंद्राकर, श्रीमती सुमन सिंह, श्रीमती संगीता कर्मकार, श्रीमती सुलभा उपाध्याय, श्रीमती रुखमणी सोनी, डॉ. श्वेता सिंह, श्रीमती यमुना शाहनी एवं श्रीमती सीमा शर्मा सहित महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं एम.एड. एवं बी.एड. प्रशिक्षार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन हरित एवं पर्यावरण-संवेदनशील परिसर के निर्माण के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

मिनीमाता को 54 वीं पुण्यतिथि पर किया सादर नमन

- मिनीमाता वात्सल्यमयी माता थीं, उन्होंने सम्पूर्ण समाज को साथ लेकर सदैव मानव कल्याण हेतु कार्य किया

रायपुर (विश्व परिवार)। मिनीमाता को 54 वीं पुण्यतिथि पर सादर नमन करने राजधानी शहर रायपुर के न्यू बस स्टैण्ड पंडरी स्थित प्रतिमा स्थल के समक्ष रायपुर नगर पालिक निगम संस्कृति विभाग के तत्त्वावधान में नगर निगम जोन 2 के सहयोग से पुष्पांजलि आयोजन रखा गया।

प्रमुख रूप से पुष्पांजलि आयोजन में प्रतिमा स्थल पहुंचकर मिनीमाता का नगर निगम सभापति सूर्यकांत राठौड, प्रदेश के पूर्व मंत्री अमितेष शुक्ल, नगर निगम सस्कृति विभाग अध्यक्ष अमर गिदवानी, राजस्व

विभाग अध्यक्ष अवतार बागल, शहीद हेमूकालाणी वार्ड पार्षद कृतिका जैन, एल्डरमेन राजू राघवानी, नगर निगम के पूर्व पार्षद सुन्दर लाल जोगी, सामाजिक कार्यकर्ता राजेन्द्र बंजारे, बबलू त्रिवेन्द्र सहित नगर की महिलाओ, गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्ताओ, वरिष्ठ नागरिको, नवयुवको, आमजनो ने बडी संख्या में 54 वी पुण्यतिथि पर सादर नमन किया।

पुष्पांजलि आयोजन में नगर निगम सभापति सूर्यकांत राठौड़, प्रदेश के पूर्वमंत्री अमितेष शुक्ल, एमआईसी सदस्य अमर गिदवानी, अवतार बागल, पार्षद कृतिका जैन, पूर्व पार्षद सुन्दरलाल जोगी ने महान समाज सुधारक मिनी माता को वात्सल्यमयी माता बतलाया, उन्होने कहा कि मिनी माता ने अपने जीवन में कभी भी किसी से कोई भेदभाव नहीं किया। सम्पूर्ण समाज को लेकर उन्होने सदैव मानव कल्याण का कार्य किया। नारी सशक्तिकरण, नारी शिक्षा, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण एव विकास में उन्होने समाज सुधारक एवं पूर्व सांसद के रूप में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया जो सदैव ससम्मान स्मरण किया जाता रहेगा।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

गरियाबंद

रायपुर, बुधवार 12 अगस्त 2026

युवा कांग्रेस ने मनाया स्थापना दिवस, पौधारोपण कर लिया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

कोरबा। भारतीय युवा कांग्रेस ने शनिवार को कोरबा में अपना स्थापना दिवस उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर जिला युवा कांग्रेस कार्यालय, एसईसीएल मुड़ापार में वृक्षारोपण एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ युवा कार्यकर्ताओं में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करना रहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल रहे। उन्होंने कार्यालय परिसर में पौधा लगाकर वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के दौर में वृक्षारोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। प्रत्येक लगाया गया पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन और बेहतर पर्यावरण का आधार बनेगा।

युवाओं से समाज सेवा और पर्यावरण संरक्षण का आह्वान- जयसिंह अग्रवाल ने उपस्थित युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को समाज सेवा, संगठन की मजबूती और पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित रहने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की आधारशिला होती है और युवाओं में समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता होती है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति सजग रहने का आह्वान करते हुए कहा कि युवा केवल राजनीति तक सीमित न रहें।

मध्यान्ह भोजन की पूरी कमान शिक्षक के हाथों!

स्व-सहायता समूह बना सिर्फ दस्तखत का मोहरा, अध्यक्ष का गंभीर आरोप–शिक्षक लाते हैं अनाज, राशि का हिसाब भी नहीं

गरियाबंद (विश्व परिवार)। शासन की महत्वाकांक्षी मध्यान्ह भोजन योजना का मकसद स्कूली बच्चों को पौष्टिक और समय पर भोजन उपलब्ध कराना है, लेकिन गरियाबंद जिले के पहुंचविहीन ग्राम भौंदी के मिडिल स्कूल में योजना के संचालन को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। आरोप है कि जिस मध्यान्ह भोजन की जिम्मेदारी स्व-सहायता समूह को दी गई है, उसकी व्यावहारिक कमान स्कूल के शिक्षक के हाथों में है। समूह की भूमिका कथित तौर पर महज दस्तखत करने तक सीमित रह गई है।

सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि मध्यान्ह भोजन के लिए रोजाना आवश्यक खाद्यान्न भी शिक्षक द्वारा स्वयं लाए जाने का आरोप है। वहीं योजना के तहत मिलने वाली राशि, उसके आहरण और खर्च की जानकारी तक समूह के पदाधिकारियों को नहीं होने की बात सामने आई है। ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि यदि शिक्षक किसी दिन स्कूल नहीं पहुंचता है, तो क्या उस दिन बच्चों के हिस्से का खाद्यान्न भी नहीं पहुंचेगा?

स्कूल का किचन पड़ा खंडहर, एक ही जगह बन रहा भोजन- मामले में एक और गंभीर तथ्य सामने आया है। स्कूल परिसर में मध्यान्ह भोजन तैयार करने के लिए अलग किचन होने के बावजूद उसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। आरोप है कि स्कूल का किचन साफ-सफाई के अभाव में बदहाल पड़ा है, जबकि छात्रावास और स्कूल के बच्चों का भोजन कथित तौर पर एक ही स्थान पर तैयार कराया जा रहा है।

स्कूल के किचन की स्थिति को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं कि जब शासन ने भोजन तैयार करने के लिए व्यवस्था उपलब्ध कराई है, तो फिर उसका उपयोग क्यों नहीं किया जा रहा है।

समूह अध्यक्ष ने खोली व्यवस्था की पोल- मध्यान्ह भोजन संचालित करने वाले स्व-सहायता समूह की अध्यक्ष ने शिक्षक कैलाश निषाद पर गंभीर आरोप लगाए हैं। अध्यक्ष के अनुसार, मध्यान्ह भोजन के लिए अनाज लाने-ले जाने का काम शिक्षक द्वारा ही किया जाता है। समूह को खाद्यान्न की मात्रा और योजना के तहत मिलने वाली राशि की पूरी जानकारी नहीं दी जाती।

अध्यक्ष का आरोप है कि राशि आहरण के लिए शिक्षक उन्हें तीन-चार महीने में एक बार बैंक ले जाते हैं। बैंक से राशि निकालने के बाद उन्हें कथित तौर पर केवल 100 रुपये दिए जाते हैं और शेष राशि शिक्षक अपने पास रख लेते हैं।

इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हुई है, लेकिन यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो यह मध्यान्ह भोजन योजना के संचालन और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर सकता है।

शिक्षक ने खुद माना—बच्चों का खाना रोज खाते हैं- मामले में शिक्षक द्वारा यह बताया जाना भी चर्चा का विषय बना हुआ है कि वे प्रतिदिन बच्चों के लिए तैयार किया जाने वाला भोजन खाते हैं। हालांकि, भोजन चखना या गुणवत्ता की निगरानी करना अलग विषय है, लेकिन खाद्यान्न की खरीद/आपूर्ति और राशि के संचालन में शिक्षक की कथित भूमिका को लेकर अब विभागीय जांच की मांग उठ रही है।

जब समूह ही जिम्मेदार है तो शिक्षक क्यों संभाल रहे खाद्यान्न?- मध्यान्ह भोजन योजना में स्व-सहायता समूहों को भोजन तैयार करने और योजना के संचालन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जाती है। ऐसे में यदि भौंदी मिडिल स्कूल में खाद्यान्न शिक्षक के माध्यम से पहुंच रहा है और राशि की जानकारी भी समूह को नहीं दी जा रही है, तो सबसे बड़ा सवाल यही है कि स्व-सहायता समूह की वास्तविक भूमिका आखिर क्या रह गई है?

ग्रामीणों का कहना है कि दूरस्थ और पहुंचविहीन क्षेत्रों में संचालित स्कूलों की योजनाओं की नियमित निगरानी बेहद जरूरी है। निगरानी के अभाव में यदि व्यवस्था कुछ लोगों तक सीमित हो जाए तो शासन की योजनाओं का सीधा लाभ बच्चों तक पहुंचने में बाधा आ सकती है।

बीईओ बोले—शिक्षक की जिम्मेदारी नहीं, शिकायत सही मिली तो होगी जांच- मामले को लेकर ब्लॉक शिक्षा अधिकारी गजेंद्र ध्रुव से बात की गई। उन्होंने स्पष्ट कहा कि शिक्षक द्वारा मध्यान्ह भोजन की जिम्मेदारी नहीं ली जानी चाहिए। यदि भौंदी मिडिल स्कूल में ऐसा हो रहा है तो मामले की जांच कराई जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर जांच टीम भी गठित की जाएगी।

अब निगाहें शिक्षा विभाग की कार्रवाई पर टिकी हैं। जांच में यदि खाद्यान्न और राशि के संचालन को लेकर लगाए गए आरोप सही पाए जाते हैं तो जिम्मेदारी तय करने के साथ-साथ योजना के संचालन की व्यवस्था में सुधार भी जरूरी होगा। आखिर यह मामला बच्चों के हिस्से के भोजन और शासन की राशि से जुड़ा है—इसमें पारदर्शिता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए।

आरएसएस के विरोध के चलते आदिवासी मुख्यमंत्री भी नहीं मना पा रहे अपना समाज का उत्सव : जनक ध्रुव

कांग्रेस विधायक का भाजपा पर तीखा हमला, बोले–विश्व आदिवासी दिवस नहीं मनाना आदिवासी अस्मिता का अपमान

गरियाबंद (विश्व परिवार)। विश्व आदिवासी दिवस को लेकर गरियाबंद की सियासत गरमा गई है। बिंद्रानवागढ़ विधायक जनक ध्रुव ने भाजपा और आरएसएस पर आदिवासी समाज की संस्कृति, अस्मिता और पहचान के विरोध का गंभीर आरोप लगाते हुए जमकर हमला बोला। स्थानीय रेस्ट हाउस में आयोजित पत्रकार वार्ता में ध्रुव ने कहा कि भाजपा सरकार सत्ता में आने के बाद आदिवासी समाज के महत्वपूर्ण पर्व विश्व आदिवासी दिवस को शासकीय स्तर पर मनाने से पीछे हट गई है।

उन्होंने कहा कि 9 अगस्त को पूरी दुनिया में आदिवासी समाज ने विश्व आदिवासी दिवस मनाया, लेकिन भाजपा के किसी नेता, यहां तक कि आदिवासी नेताओं, राष्ट्रपति और मुख्यमंत्री की ओर से भी आदिवासी समाज को बधाई संदेश नहीं दिया गया। ध्रुव ने आरोप लगाया कि वर्ष 2023 के पहले भाजपा के नेता भी विश्व आदिवासी दिवस की बधाई देते थे, लेकिन सत्ता में आने के बाद सरकार का रवैया बदल गया।

जनक ध्रुव ने आरएसएस पर निशाना साधते हुए कहा कि आरएसएस आदिवासी समाज की स्वतंत्र संस्कृति और अस्मिता को स्वीकार करने के बजाय उन्हें 'वनवासी' की पहचान देने पर तुली हुई है। उन्होंने आरोप लगाया कि इसी मानसिकता के कारण विश्व आदिवासी दिवस का विरोध किया जा रहा है। विधायक ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस महज उत्सव मनाने का अवसर नहीं है, बल्कि आदिवासी समाज की एकता, संस्कृति, सभ्यता और पहचान को दुनिया के सामने रखने का दिन है। आदिवासी संस्कृति दुनिया की प्राचीन और मौलिक संस्कृतियों में से एक है। ऐसे में छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में, जहां आदिवासी समाज की बड़ी आबादी है और प्राचीन आदिवासी परंपराओं की समृद्ध विरासत मौजूद है, शासकीय स्तर पर विश्व आदिवासी दिवस का आयोजन नहीं किया जाना समाज का अपमान है।

जनक ध्रुव ने भाजपा सरकार पर तीखा कटाक्ष करते हुए कहा कि भाजपा ने एक आदिवासी को मुख्यमंत्री तो बना दिया, लेकिन उन्हें अपने ही आदिवासी भाई-बहनों के साथ विश्व आदिवासी दिवस मनाने से भी रोक रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार आदिवासी समाज को केवल वोट बैंक के रूप में देखती है। आदिवासी समाज की संस्कृति और अस्मिता के प्रति सरकार की सोच विश्व आदिवासी दिवस के आयोजन को लेकर साफ दिखाई देती है। उन्होंने चेतावनी दी कि आदिवासी समाज भाजपा के इस रवैये को भूलेगा नहीं।

विधायक ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस अपनी जड़ों को याद करने और उन पर गर्व करने का दिन है। आदिवासी समाज ने सदियों से जल, जंगल, जमीन, प्रकृति और मानवता के बीच संतुलन बनाकर रखा है।

उन्होंने कहा, जंगल आदिवासियों के लिए केवल लकड़ी नहीं, नदी केवल पानी नहीं और जमीन केवल संपत्ति नहीं है। जंगल उनका जीवन, जल उनकी सांस, जमीन उनकी पहचान और संस्कृति उनकी आत्मा है। जनक ध्रुव ने कहा कि बस्तर से लेकर सरगुजा, कांकेर, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा, कोरबा, जशपुर, बलरामपुर और गरियाबंद के वनांचलों तक आदिवासी समाज ने अपनी मेहनत, संस्कृति और संघर्ष से छत्तीसगढ़ की पहचान गढ़ी है। आदिवासी संस्कृति के बिना छत्तीसगढ़ की पहचान अधूरी है। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की अस्मिता, अधिकार और जल-जंगल-जमीन के अधिकार से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। भाजपा और आरएसएस भले ही विश्व आदिवासी दिवस का विरोध करें, लेकिन आदिवासी समाज इसे गर्व और स्वाभिमान के साथ मनाता रहा है और आगे भी मनाता रहेगा।

पत्रकार वार्ता के दौरान जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुखचंद बेसरा, रमेश शर्मा, छगन यादव, नीरज ठाकुर, पवन सोनकर, सुनील तिवारी, रमेश वर्मा सहित कांग्रेस के अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

57 मवेशियों को ओडिशा ले जाने की कोशिश! जंगल के रास्ते हांकते मिले, एक गिरफ्तार; दूसरा फरार

छुरा थाना क्षेत्र में बड़ी कार्रवाई, 20 बछिया, 20 गाय और 17 बछड़े बरामद; फरार आरोपी की तलाश तेज

गरियाबंद (विश्व परिवार)। छुरा थाना क्षेत्र में 57 मवेशियों को कथित रूप से अवैध तरीके से ओडिशा के कत्लखाने ले जाने का मामला सामने आया है। जंगल के रास्ते मवेशियों को लाठी से पीटते हुए ओडिशा की ओर ले जाने की सूचना पर पुलिस और स्थानीय लोगों ने कार्रवाई करते हुए मवेशियों को सुरक्षित बरामद किया। मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि दूसरा आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर जंगल की ओर भाग निकला।

पुलिस के अनुसार, 10 अगस्त को सूचना मिली थी कि बिरनीबाहरा जंगल के रास्ते दो व्यक्ति बड़ी संख्या में मवेशियों को हांकते हुए ओडिशा की ओर ले जा रहे हैं। सूचना के बाद मौके पर पहुंचे लोगों ने दो व्यक्तियों को मवेशियों को लाठी से पीटते हुए ले जाते देखा। इस दौरान कुल 57 मवेशी, जिनमें 20 बछिया, 20 गाय और 17 बछड़े शामिल थे, बरामद किए गए।

मवेशियों को ग्राम मोंगरा तक लाया गया। देर रात होने के कारण सभी मवेशियों को सुरक्षित रूप से गौठान में रखा गया। पूछताछ के दौरान दोनों व्यक्तियों की पहचान हेमलाल खैरवार और मनीराम कमार, निवासी उलटपारा गोंदलाबाहरा, थाना छुरा के रूप में हुई। मवेशियों को गौठान में सुरक्षित करने के दौरान मनीराम कमार अंधेरे का फायदा उठाकर जंगल की ओर फरार हो गया। पुलिस ने उसकी तलाश शुरू कर दी है। छुरा थाना पुलिस ने मामले में अपराध क्रमांक 155/2026 दर्ज किया है। आरोपियों के खिलाफ छत्तीसगढ़ कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम 2004 की धारा 4, 6, 10 तथा पशु क्रूरता निवारण अधिनियम 1960 की धारा 11(1)(क) के तहत कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने हेमलाल खैरवार को 10 अगस्त की शाम करीब 7 बजे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां 25 अगस्त 2026 तक न्यायिक रिमांड की मांग की गई है।

पहली बरसात में ही बह गई करोड़ों की जनमन सड़क!

लोकार्पण से पहले उखड़ी सड़क, बह गया निर्माणाधीन पुल; गुणवत्ता पर उठे गंभीर सवाल

गरियाबंद (विश्व परिवार)। आदिवासी और पहुंचविहीन गांवों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए करोड़ों रुपये खर्च कर बनाई जा रही जनमन सड़क पहली ही बरसात में दम तोड़ती नजर आ रही है। कमर भौंदी से कमारपारा तक निर्माणाधीन सड़क कई जगह से उखड़ गई, वहीं रास्ते में बनाया जा रहा पुल भी तेज बारिश के पानी में बह गया। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि जिस पुल का अभी लोकार्पण तक नहीं हुआ, उसके बहने के बाद अब उसकी मरम्मत शुरू कर दी गई है। पहली बारिश में सामने आई इस तस्वीर ने सड़क और पुल निर्माण की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

जिला मुख्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर कमर भौंदी से कमारपारा तक पहुंच मार्ग का निर्माण प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (जनमन) के तहत कराया जा रहा है। इस मार्ग में सड़क निर्माण के साथ करीब नौ नालों में पुल और रपटा निर्माण का काम भी शामिल है।

ग्रामीणों के अनुसार निर्माण कार्य पूर्णता की ओर बताया जा रहा था, लेकिन पहली ही बारिश ने निर्माण की गुणवत्ता की पोल खोल दी। सड़क कई स्थानों पर उखड़ गई है और निर्माणाधीन पुल का एक हिस्सा पानी के तेज बहाव में बह गया।

मौके पर सड़क की स्थिति देखकर ग्रामीणों ने निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल उठाए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क पर डामरीकरण की परत बेहद पतली है और कई स्थानों पर इसकी मोटाई करीब एक इंच के आसपास ही दिखाई दे रही है। उनका कहना है कि यही वजह है कि पहली बारिश का दबाव सड़क सहन नहीं कर पाई और डामर की परत उखड़ने लगी।

हालांकि सड़क निर्माण में निर्धारित तकनीकी मापदंडों का पालन हुआ है या नहीं, इसकी वास्तविक स्थिति तकनीकी जांच के बाद ही स्पष्ट होगी। लेकिन पहली बरसात में सड़क का उखड़ना और पुल का बह जाना निर्माण एजेंसी की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान जरूर लगा रहा है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि ग्रामीणों की सुविधा के लिए जिस सड़क और पुल का निर्माण कराया जा रहा है, वह लोकार्पण से पहले ही मरम्मत के दौर में क्यों पहुंच गया?

पुल के बहने के बाद अब उसे दोबारा दुरुस्त किया जा रहा है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब निर्माण कार्य पूरा होने के बाद उसकी गुणवत्ता की जांच की जानी है, तो पहली बारिश में ही निर्माण की खामियां सामने कैसे आ गईं?

जनमन योजना का उद्देश्य विशेष रूप से आदिवासी समुदाय के दूरस्थ और पहुंचविहीन क्षेत्रों में सड़क, पुल-पुलिया जैसी बुनियादी सुविधाएं पहुंचाना है। ऐसे में यदि करोड़ों रुपये खर्च कर तैयार किया जा रहा मार्ग पहली बरसात में ही जवाब देने लगे, तो योजना के क्रियान्वयन और निगरानी व्यवस्था पर सवाल उठना लाजिमी है।

ग्रामीणों ने पूरे निर्माण कार्य की तकनीकी जांच कराने, सड़क की वास्तविक मोटाई मापने तथा निर्माण में इस्तेमाल सामग्री की गुणवत्ता की जांच करने की मांग की है। साथ ही निर्माण में लापरवाही या अनियमितता सामने आने पर जिम्मेदार अधिकारियों और निर्माण एजेंसी के खिलाफ कार्रवाई की मांग भी उठाई है।

पहली बारिश ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। आखिर करोड़ों की लागत से बन रही जनमन सड़क पहली बरसात भी क्यों नहीं झेल पाई? क्या निर्माण के दौरान निर्धारित गुणवत्ता मानकों की अनदेखी हुई? यदि निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण था, तो लोकार्पण से पहले ही सड़क और पुल की मरम्मत की नौबत क्यों आ गई? इन सवालों का जवाब अब संबंधित विभाग और निर्माण एजेंसी से अपेक्षित है। ग्रामीणों की मांग है कि पूरे मामले की निष्पक्ष तकनीकी जांच कराई जाए, ताकि सरकारी धन के उपयोग और निर्माण की गुणवत्ता की वास्तविक तस्वीर सामने आ सके।

संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय रायपुर-छत्तीसगढ़

दूरभाष : 0771-2537404, टेलीफैक्स 0771-2234731
ई-मेल: deptt. archaeologye@gmail.com वेब साइट: www.cgculture.in

क्रमांक 625/अनु./पु.अ.सं./2026 — रायपुर, दिनांक 07/08/2026

मैनुअल पद्धति निविदा सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित कार्य हेतु मैनुअल निविदा आमंत्रित की जाती है:-

क्र.	कार्य का नाम	ठेके की अनुमानिक राशि	बयाने की राशि
1	राज्य सरक्षित स्मारक देवरानी जेठानी मंदिर ताला जिला बिलासपुर के जेठानी मंदिर में ईट संरचना का अनुरक्षण कार्य।	9,87,000.00	20,000.00
2	राज्य संरक्षित स्मारक ध्वस्त मंदिर, रानी तालाब के समीप जिला बलरामपुर के मंदिर कमांक 01,02,03 एवं 04 में अनुरक्षण कार्य।	9,95,000.00	20,000.00
3	राज्य संरक्षित स्मारक चितावरी देवी मन्दिर, धोबनी, जिला बलौदाबाजार में प्लिन्थ प्रोटेक्शन, सुरक्षा घेरा, पाथवे एवं सिटींग चेयर निर्माण कार्य।	9,95,000.00	20,000.00
4	राज्य संरक्षित स्मारक कुरिया झोरकी महेशपुर जिला सरगुजा में पाथवे निर्माण, प्लींथ प्रोटेक्शन निर्माण, शेड रिपेरिंग एवं सुरक्षा घेरा रिपेरिंग कार्य।	9,95,000.00	20,000.00
5	राज्य सरक्षित स्मारक शिव मंदिर एवं ठाकुरबाड़ी मंदिर महेशपुर जिला सरगुजा के शिव मंदिर में टॉयलेट ब्लाक, पेंटिग एवं पाथवे निर्माण कार्य।	8,60,000.00	17,200.00
6	स्मारक स्थल सामत सरना, डीपाडीह जिला बलरामपुर में टॉयलेट ब्लाक एवं पाथवे निर्माण कार्य।	9,90,000.00	20,000.00
7	उत्खनन स्थल मदकूद्वीप जिला मुंगेली में टॉयलेट ब्लाक निर्माण कार्य।	7,49,000.00	15,000.00
8	राज्य सरक्षित स्मारक देवरानी जेठानी मदिर ग्राम-ताला जिला बिलासपुर में टॉयलेट ब्लाक निर्माण कार्य।	7,49,000.00	15,000.00
9	राज्य सरक्षित स्मारक शिव मंदिर एवं ठाकुरबाड़ी मंदिर महेशपुर जिला सरगुजा के ठाकुरबाड़ी मंदिर में फ्लोरिंग, सुरक्षा घेरा एवं सिटींग चेयर निर्माण कार्य।	9,95,000.00	20,000.00

ठेकेदार की श्रेणी - उपयुक्त श्रेणी,
कार्यावधि - कार्यादेश से 03 माह,
निविदा प्रपत्र की राशि रू. 750/- (रू. सात सौ पचास मात्र)

01. कोरी निविदा प्रपत्र विक्रय की अंतिम तिथि 21.08.2026 शाम 5:00 बजे तक।
02. बंद निविदा प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि 01.09.2026. शाम 5:00 बजे तक।
03. निविदा खोलने की तिथि एवं समय दिनांक 02.09.2026 दोपहर 12.00 बजे।

(निर्धारित तिथि को अवकाश घोषित होने पर आगामी कार्य दिवस में निविदा प्रस्तुत एवं खोली जावेगी)

- कंडिका क्रमांक 01 एवं 02 कार्यों के लिए ठेकेदार / फर्म को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अथवा राज्य पुरात्तव विभाग में अनुरक्षण कार्य के लिए न्युनतम 03 वर्षों का अनुरक्षण कार्य का अनुभव होना आवश्यक है, निविदा फार्म कय करने हेतु अनुभव प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा अन्यथा निविदा प्रपत्र जारी नही किया जावेगा।
- अमानत राशि एफ.डी.आर. / बैंक ड्राफ्ट 3 वर्ष का जो कि संचालक, पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर सिविल लाईन रायपुर छ.ग. के नाम से बनवाना होगा।
- निविदा के सामान्य शर्तें विस्तृत निविदा विज्ञप्ति एवं निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय में उपस्थित होकर या विभागीय वेबसाईट www.cgculture.in पर निविदा जारी दिनांक से देखी जा सकती है।

संचालक
पुरातत्व अभि. एवं संग्रहालय
रायपुर (छ.ग.)

जी- 262702692/1

विधायक भावना बोहरा और कांवड़ियों की 151 किमी कांवड़ पदयात्रा

- नदी, पहाड़, और घने जंगल को पार करते हुए नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही कांवड़ पदयात्रा

कवर्धा (विश्व परिवार)। सावन मास की पवित्रता और भगवान भोलेनाथ की भक्ति के साथ पंडरिया विधायक भावना बोहरा द्वारा माँ नर्मदा मंदिर, अमरकंटक से भोरमदेव मंदिर तक निकाली जा रही 151 किलोमीटर की कांवड़ पदयात्रा दूसरे दिन भी पूरे उत्साह और आस्था के साथ जारी रही। यात्रा के दूसरे दिन ग्राम लमनी से वन ग्राम महामाई (खुड़िया) तक कांवड़ियों के साथ पदयात्रा करते हुए भावना बोहरा ने छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि, शांति, खुशहाली एवं सर्वमंगल की कामना की। यात्रा के दौरान नदी, पहाड़ों, पथरीले रास्तों और घने जंगलों जैसे कठिन मार्गों को पार करते हुए कांवड़ियों के कदम लगातार आगे बढ़ते रहे। 'बोल बम' और 'हर हर महादेव' के जयघोष से पूरा मार्ग शिवमय नजर आया। कठिन परिस्थितियों के बावजूद कांवड़ियों में उत्साह और उमंग कम होने के बजाय और अधिक बढ़ता गया। 10 अगस्त से 16 अगस्त तक इस कांवड़ पदयात्रा के प्रथम दिन माँ नर्मदा मंदिर अमरकंटक से ग्राम लमनी तक विधायक भावना बोहरा के साथ लगभग 600 कांवड़ियों ने यात्रा पूरी की और आज दूसरे दिन प्रातः ही कांवड़ की पूजा कर यात्रा वन ग्राम महामाई (खुड़िया) में संपन्न हुई।

इस अवसर पर विधायक भावना बोहरा ने कहा कि यह यात्रा मेरे लिए केवल 151 किलोमीटर की पदयात्रा नहीं, बल्कि आस्था, संकल्प, साधना और जनकल्याण की भावना से जुड़ी एक आध्यात्मिक यात्रा है। माँ नर्मदा के पावन उद्गम स्थल से भोरमदेव धाम तक का यह मार्ग हमें प्रकृति, संस्कृति और सनातन आस्था से जोड़ रहा है। पहाड़ हों, पथरीले रास्ते हों या घने जंगल, महादेव की भक्ति में उठाया गया हर कदम हमें आगे बढ़ने की शक्ति देता है। यात्रा के कठिन रास्तों ने हमारे शरीर की परीक्षा जरूर ली है, लेकिन हर पड़ाव के साथ हमारा उत्साह दोगुना और विश्वास और अधिक प्रबल हुआ है। कांवड़ियों के साथ मिल रहा जनस्नेह और 'बोल बम' का जयघोष हमारी ऊर्जा को लगातार बढ़ा रहा है। सावन के इस पवित्र अवसर पर भगवान भोलेनाथ और माँ नर्मदा से पूरे छत्तीसगढ़ की सुख-समृद्धि, किसानों की खुशहाली, युवाओं के उज्ज्वल भविष्य, माताओं-बहनों के सम्मान और प्रत्येक परिवार के मंगलमय जीवन की प्रार्थना करते हुए हमारी यात्रा निरंतर आगे बढ़ रही है।

भावना बोहरा ने कहा कि घने वनों के बीच बहती शीतल हवाएं, चारों ओर हरियाली और वनांचल की शांत वादियों के बीच ऐसा लग रहा जैसे प्रकृति स्वयं इस आध्यात्मिक यात्रा में साथ चलकर आशीर्वाद दे रही हो। कठिन राह, दुर्गम रास्ते और लंबी यात्रा के बावजूद सभी कांवड़ियों के मन में उत्साह और कदमों में ऊर्जा बनी रही। माँ नर्मदा के पावन जल और भोलेनाथ के प्रति अटूट श्रद्धा ने हर कठिनाई को सहज बना दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि माँ नर्मदा की कृपा और भगवान महादेव के आशीर्वाद से यह यात्रा निर्विघ्न पूर्ण होगी और भोरमदेव धाम में जलाभिषेक के साथ छत्तीसगढ़ के सर्वांगीण विकास एवं सर्वमंगल का संकल्प और अधिक मजबूत होगा।

राहुल गांधी युवाओं के मुद्दों की आड़ में अराजकता फैलाने का षड्यंत्र रच रहे : विजय शर्मा

- नीट परीक्षा पेपर लीक और झारखण्ड के युवा आन्दोलन को लेकर राहुल गांधी, कांग्रेस और विपक्ष के दोहरे राजनीतिक चरित्र पर उप मुख्यमंत्री शर्मा ने बोला तीखा हमला

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री/गृह मंत्री विजय शर्मा ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और विपक्ष की भूमिका पर जोरदार हमला बोलते हुए आरोप लगाया है कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी युवाओं के मुद्दों की आड़ में देश में अराजकता और भ्रम फैलाने का षड्यंत्र रच रहे हैं। श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार युवाओं और जनता के मुद्दों पर बेहद संवेदनशील है, जबकि राहुल गांधी सिर्फ राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के लिए विरोध प्रदर्शनों का सहारा ले रहे हैं। श्री शर्मा मंगलवार को यहाँ अपने नया रायपुर स्थित निवास पर आहूत महती पत्रकार वार्ता को सम्बोधित कर रहे थे।

प्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने कहा कि देश में लोकतंत्र के तहत शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना हर नागरिक का अधिकार है और सरकार ऐसे प्रदर्शनों का स्वागत करती है। लेकिन जब प्रदर्शनों के नाम पर राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया जाता है या भारत के पड़ोसी देशों (जैसे नेपाल, बांग्लादेश या पाकिस्तान) जैसी अस्थिर परिस्थितियों को भारत में निर्मित करने का गर्हित एजेण्डा चलाने का प्रयास किया जाता है, तो यह अत्यन्त चिंताजनक और अस्वीकार्य हो जाता है। राहुल गांधी और उनका दल लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से नरेंद्र मोदी सरकार को हरा नहीं पा रहे हैं, इसलिए वे देश में अराजकता फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। नीट परीक्षा के पेपर लीक प्रकरण पर बोलते हुए श्री शर्मा ने कहा कि परीक्षा का पेपर लीक होना एक दु:खद घटना थी, जिससे युवाओं में स्वाभाविक आक्रोश आया। युवाओं के इस विरोध-प्रदर्शन का स्वागत करते हुए केंद्र सरकार ने इस पर बेहद संजीदा और संवेदनशील रुख अपनाया। एक जज की टिप्पणी के बाद मेहनतकश केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे से लेकर सदन में चर्चा और सख्त नए कानून लाने तक सरकार ने हर वह कदम उठाया जिससे भविष्य में ऐसी घटनाओं पर पूरी तरह रोक लग सके।

अतुल प्रधान को प्रबंधन विषय में पीएचडी की उपाधि

रायपुर (विश्व परिवार)। एमिटी विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा कोंडागांव जिले के माकड़ी निवासी अतुल प्रधान को प्रबंधन विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्रदान की गई है।

अतुल प्रधान ने 'The Study on Digital Marketing Analytics for Effective Political Promotion in Chhattisgarh' विषय पर शोध कार्य किया। उनके शोध में डिजिटल मार्केटिंग एनालिटिक्स और सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक प्रचार को अधिक प्रभावी बनाने के साथ-साथ मतदाताओं की सहभागिता पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया।

उन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. अन्नपूर्णा मेट्टा के मार्गदर्शन तथा प्रो. (डॉ.) सत्येन्द्र पटनायक के सह-मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

अतुल प्रधान कोंडागांव जिले के माकड़ी निवासी श्री रमेश प्रधान एवं श्रीमती सरस्वती प्रधान के सुपुत्र हैं। पीएचडी की उपाधि मिलने पर उनके परिवार, शुभचिंतकों और क्षेत्रवासियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।

अतुल प्रधान की यह उपलब्धि उनके निरंतर परिश्रम, शोध के प्रति समर्पण और लगन का परिणाम मानी जा रही है। डिजिटल माध्यमों और राजनीतिक संचार जैसे समकालीन विषय पर किया गया उनका शोध अकादमिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

महापौर मीनल चौबे ने राजस्व वसूली को लेकर सभी जोन कमिश्नरों को दिए सख्त निर्देश

रायपुर (विश्व परिवार)। आज रायपुर नगर पालिक निगम की महापौर श्रीमती मीनल चौबे की अध्यक्षता में नगर निगम मुख्यालय भवन के महापौर कार्यालयीन कक्ष में हुई आवश्यक बैठक में शहर के विभिन्न वार्डों में विकास कार्यों, पेयजल, जल निकासी, अवैध निर्माण, पार्किंग व्यवस्था, कॉलोनी विकास, राजस्व वसूली एवं वेंडिंग जोन सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई एवं सभी जोन कमिश्नरों को सख्त निर्देश दिए गए।

बैठक में महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने सभी जोन कमिश्नरों, कार्यपालन अभियंताओं, सहायक अभियंताओं को जनहित से सम्बंधित सभी कार्यों में तेजी लाने तथा निर्धारित समय-सीमा में निराकरण की आवशयक कार्रवाई सुनिश्चित करने के स्पष्ट निर्देश दिए।

बैठक में महापौर ने प्रत्येक वार्ड में 10 लाख रुपये तक के नवीन विकास कार्यों को करवाने शीघ्र प्रस्ताव तैयार करने तथा संबंधित वार्ड पार्षदों से चर्चा कर जनहित में आवश्यक विकास कार्यों को प्रस्ताव में प्राथमिकता देने के निर्देश दिए।

बैठक में महापौर ने राजधानी शहर में निर्माणाधीन अवैध निर्माणों से संबंधित प्रकरणों में नियमानुसार प्रक्रिया के अंतर्गत अवैध निर्माणों को हटाने की कार्रवाई करने के सख्त निर्देश सभी जोन कमिश्नरों को दिए हैँ । महापौर ने सभी जोन कमिश्नरों को बिना पार्किंग के संचालित होने वाले प्रतिष्ठानों एवं संस्थानों के विरुद्ध प्रक्रिया के अंतर्गत नियमानुसार कड़ी कार्रवाई करने निर्देशित किया है।

महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने बैठक में कॉलोनी विकास अनुमति से संबंधित मामलों में कॉलोनी पूर्णता प्रमाणपत्र जारी करने की प्रक्रिया में अनावश्यक विलंब न हो, यह सुनिश्चित करने निर्देशित किया। महापौर ने कॉलोनी विकास अनुमति प्रकरणों में आवश्यक पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित होने के पश्चात ही संबंधित प्रक्रिया पूर्ण करने के स्पष्ट निर्देश दिए।

महापौर मीनल चौबे द्वारा कॉलोनी विकास अनुमति से संबंधित प्रकरणों में आवश्यक दस्तावेज एवं प्रतिलिपियां उपलब्ध कराने तथा नियमों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश सभी जोन अधिकारियों को दिए गए। महापौर ने बंधक प्लॉट में परिवर्तन की अनुमति न दिए जाने के संबंध में भी स्पष्ट निर्देश दिए।

'भारतीय व्यापार महोत्सव 2026' के भूमि पूजन समारोह में CAIT के शीर्ष नेतृत्व ने लिया भाग

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय व्यापार महोत्सव 2026 में हिस्सा लेने हेतु छत्तीसगढ प्रदेश एवं जिला स्तर के लगभग 150 पदाधिकारी, विभिन्न व्यापारी संगठनों के प्रतिनिधि एवं व्यापारी बंधुओं ने दिल्ली रवाना हुए। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के नेशनल वाइस चेयरमेन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड के सदस्य अमर पारवानी, छत्तीसगढ़ इकाई के चेयरमेन जितेन्द्र दोशी, विक्रम सिंहदेव, प्रदेश अध्यक्ष परमानंद जैन, वाइस चेयरमेन सुरिन्दर सिंह, जीवत बजाज, प्रदेश महामंत्री अवनीत सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष विजय पटेल, कार्यकारी अध्यक्ष राजेन्द्र जग्गी, वासु माखीजा, राम मंधान, भरत जैन, राकेश ओचवानी एवं शंकर बजाज ने संयुक्त रूप से बताया कि आज देश के व्यापार और उद्यमिता को नई दिशा देने वाले 'भारतीय व्यापार महोत्सव 2026' के भव्य एवं ऐतिहासिक आयोजन का भूमि पूजन समारोह आज भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में पूरे वैदिक विधि-विधान से संपन्न हुआ।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./34264/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34264
वार्ड का नाम-57- भगवती चरण शुक्ला वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 57 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR447D00108 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती INDRA KUMAR UDHAMDAS पिता/पति, श्री/श्रीमती UDHAMDAS के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती महेश कुमार वासवानी पिता/पति, श्री/श्रीमती मेला राम वासवानी ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मिनीमाता पुन्यतिथि पर दीप प्रज्वलन एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय, बलौदाबाजार में आज मिनीमाता जी के पुन्यतिथि के अवसर पर श्रद्धापूर्वक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य, समस्त स्टाफ एवं छात्राओं द्वारा मिनीमाता जी के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ कल्पना उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में मिनीमाता जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मिनीमाता जी भारत की प्रथम महिला सांसदों में अग्रणी एवं छत्तीसगढ़ की गौरवशाली विभूति थीं। उन्होंने समाज के वंचित, गरीब एवं शोषित वर्गों के उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किए तथा महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक समरसता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विधानसभा अध्यक्ष, सांसद व महापौर ने दी हरेली तिहार की बधाई

राजनांदगांव। विधानसभा अध्यक्ष व विधायक डॉ. रमन सिंह, सांसद श्री संतोष पाण्डे एवं महापौर श्री मधुसूदन यादव ने नागरिको को छत्तीसगढ़ के पहली तिहार हरेली पर्व की अन्नय शुभकामनाएं दी है। उन्होने बधाई देते हुये कहा कि छत्तीसगढ़ में त्यौहारों की शुरवात हरेली त्यौहार से होती है, जिसे सावन मास के अमावस्या के दिन मनाया जाता है, इसलिये इसे हरियाली अमावस्या भी कहते है। विधायक डॉ. सिंह, सांसद श्री पाण्डे व महापौर श्री यादव ने कहा कि हरेली के दिन किसान अपने हल एवं कृषि औजारों की पूजा करते है और भगवान से अच्छी फसल की कामना करते है। त्यौहार में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक व्यंजन चिला, फरा आदि बनाकर खाया एवं खिलाया जाता है। इस दिन बास से बने गेडी चढकर तथा ग्रामीण परिवेश के खेल खो, कबड्डी, फुगड़ी आदि खेल कर त्यौहार का आनंद उठाया जाता है।

गुणवत्तापूर्ण व तेजी के साथ करें राजस्व प्रकरणों का निराकरण : कलेक्टर

- मुख्यालय से अनुपस्थित रहने वाले सचिव,पटवारी एवं आरएईओ को नोटिस जारी करने के निर्देश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर कुलदीप शर्मा ने मंगलवार को समय सीमा की बैठक में विभागीय कार्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने 3 से 12 माह तक लंबित राजस्व प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण एवं तेजी के साथ निराकरण करने के निर्देश दिये। समीक्षा के दौरान सम्पर्क केन्द्र के माध्यम से ली गई जानकारी के आधार पर अपने निर्धारित मुख्यालय से अनुपस्थित रहने वाले 2 ग्राम पंचायत सचिव,11 पटवारियों एवं 16 ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि शासन की मंशानुसासर कार्यालय में अधिकारी -कर्मचारी समय पर उपलब्ध रहे ताकि लोगों की समस्याओं का समय पर समाधान हो सके।उन्होंने कहा कि लापरवाही बरतने वाले अधिकारी -कर्मचारियों पर पर प्रशासन द्वारा सख्त अनुशासनातमक कार्यवाही की जाएगी।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ट्रैक मशीन/इंजीनियरिंग विभाग
ई-निविदा

क्रमं (1) निविदा सं.: एसईसीआर-टीएम-टूल्स-2026-06, दिनांकः 24.07.2026
कार्य का नाम : दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर स्थित सैटेलाइट डिपो में न्यूमैटिक टूल्स, पाइपलाइन, कंप्रेसर एवं सहायक उपकरणों सहित पूर्ण व्यवस्था की आपूर्ति, स्थापना (इरेक्शन) एवं कमीशनिंग का कार्य।
निविदा मूल्यः ₹ 17,75,040.96/-। निविदा बंद होने की तिथि और समय : 17/08/2026 को 11.00 बजे।
क्रमं (2) निविदा सं.: एसईसीआर एचक्यू इंजी टीएम-बीआरएन-2026-05A दिनांकः 29.07.2026
कार्य का नाम : टीआरटी मशीन के उपयोग हेतु बीआरएन वैगनों पर गैंट्री रेलों की आपूर्ति, फिटिंग एवं वेल्डिंग।
निविदा मूल्यः ₹ 2,36,02,820.00/-। निविदा बंद होने की तिथि और समय : 20/08/2026 को 11.00 बजे।
निविदा सूचना और निविदा दस्तावेजों की पूरी जानकारी के लिए निविदाकर्ता **www.ireps.gov.in** वेबसाइट पर लॉगइन कर सकते हैं। ईनिविदा के-विरुद्ध मैन्युअल निविदाएं पर विचार नहीं किया जाएगा।
कार्यपालन इंजीनियर/टी.एम./मुख्या.
सीपीआर/10/321 द.पू.म. रेलवे, बिलासपुर
South East Central Railway @secrail

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)
पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /34266/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34266
वार्ड का नाम-8- महात्मा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 8 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR226Z00506 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती PANKAJ GUPTA पिता/पति, श्री/श्रीमती K. C. GUPTA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती DEEPTI AGARWAL पिता/पति, श्री/श्रीमती ARUN AGARWAL ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./33013/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2026
रायपुर, दिनांक 10-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33013
वार्ड का नाम-64- डॉ. विपिन बिहारी सूर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 64 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR662I00345 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RAMU LAL SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती KALA RAM के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती पुष्पा साहू 2 विवेक कुमार प्रकाश साहू 3 रविकांत साहू 4 पुष्पलता साहू 5 शकुंतला साहू 6 संगीता साहू 7 नुजहत कुरैशी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति स्व. रामू लाल साहू एवं समस्त पिता स्व. रामू लाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **अन्य** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-4)
प्रेस क्लब, पानी टंकी के नीचे, छोटापारा, रायपुर
E-mail ID - rmczone4@gmail.com

पत्र क्र./29257/ न.पा.नि./जोन क्र.-4/2026
रायपुर, दिनांक 10-03-2026

इश्तिहार/त्रुटि सुधार

नामांतरण प्र.क्र. 29257
वार्ड का नाम-64- डॉ. विपिन बिहारी सूर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 64 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR656D0178A जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MRS. NANDANI SHRIWAS पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. MOHAN LAL SHRIWAS के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **शोभा श्रीवास पति रवि नारायण श्रीवास, पुष्पा श्रीवास पति ओम श्रीवास, संतोषी श्रीवास पति देवेश श्रीवास** पिता/पति, श्री/श्रीमती N/A ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती दिव्या चंद्रवंशी
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-4
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-7)
मंगलम काम्प्लेक्स अग्रसेन चौक, रायपुर
E-mail ID - rmczone7@gmail.com

पत्र क्र./34280/ न.पा.नि./जोन क्र.-7/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34280
वार्ड का नाम-36 - तात्यापारा वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 36 स्थित/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR738B00341 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MANJU SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती PAWAN KUMAR SAHU के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती HEMANT KUMAR SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती PAWAN KUMAR SAHU ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, सहमति पत्र,** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
डॉ. तृप्ति पाणिग्रही
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-7
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./34241/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34241
वार्ड का नाम-33 - शहीद वीर नारायण सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 33 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR328D00302 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SMT. SUDARSHAN MARVAH पिता/पति श्री/श्रीमती W/O OMPRAKASH MARVAH के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती KAMAL KISHOR MARWAH पिता/पति श्री/श्रीमती S/O LATE. OM PRAKASH MARWAH ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर

पत्र क्र./34342/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34342
वार्ड का नाम-12 - कालीमाता वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 12 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR229H00024 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SHEKH ASHIF AHAMAD , SHEKH ARIF AHAWAD पिता/पति श्री/श्रीमती S/O SHEKH AMIR AHAMAD के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती सबिहा खान 2 कफील अहमद खान 3 मोहम्मद फैजान नियाजी 4 मोहम्मद शोकत नियाजी** पिता/पति श्री/श्रीमती **1. पति- कफील अहमद खान 2 पिता - अब्बास खान 3. पिता - कफील अहमद खान 4 पिता - कफील अहमद खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./34239/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34239
वार्ड का नाम-33 - शहीद वीरनारायण सिंह वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 33 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR328A00051 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MAHADEV KATURE पिता/पति श्री/श्रीमती S/O GHODBAJI KATURE के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती ASHWINI RAHUL GAWANDE पिता/पति श्री/श्रीमती W/O RAHUL GAWANDE ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./34334/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2026
रायपुर, दिनांक 11-08-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 34334
वार्ड का नाम-30 - शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR328C0011 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SMT. MEENA PHATNANI पिता/पति श्री/श्रीमती W/O MORANDMAL KALWANI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती ANGAD BAHAL पिता/पति श्री/श्रीमती S/O SANJAY BAHAL ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ शासन

हमर छत्तीसगढ़ के पहिली लोक परब

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

हरेली तिहार

12 अगस्त 2026

के गाड़ा-गाड़ा बधाई

कृषकों का आर्थिक सशक्तीकरण

- ढाई वर्षों में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत किसानों के खाते में **₹1.50 लाख करोड़** से अधिक अंतरित
- **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि : 25 लाख** से अधिक किसानों को **₹11,277 करोड़** का भुगतान

दीनदयाल उपाध्याय भूमिहीन कृषि मजदूर कल्याण योजना

- भूमिहीन कृषि मजदूरों को प्रतिवर्ष **₹10,000** की आर्थिक सहायता

कृषि का आधुनिकीकरण

- जीएसटी 2.0 लागू होने से **कृषि उपकरण हुए सस्ते**

कृषक उन्नति योजना

- **₹3,100 प्रति क्विंटल** की दर से प्रति एकड़ **21 क्विंटल** धान खरीदी

फसल विविधीकरण को प्रोत्साहन

- धान के अतिरिक्त अन्य खरीफ फसलों की खेती पर प्रति एकड़ **₹15,000** की आदान सहायता

आसान ऋण सुविधा

- खाद- बीज की खरीदी के लिए **ब्याज मुक्त ऋण**

हरियर धरती, खुशहाल किसान
समृद्धि और जनकल्याण, सुशासन की पहचान

SAMVAD- 48731/113

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in